04 - भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद के प्रणेता थे स्वामी दयानंद...

05 - पद्मश्री श्याम बिहारी के कृतियों में जन जीवन की झलक

A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 23 फरवरी, 2025
इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 10 अंक 138, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

06 - साल 2016 में मिले थे दो गिद्ध, इसके बाद जिले में...

07 - आस्था के पवित्र संगम में सितारों की डुबकी

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

मोहनी रोशनी से सजी मोरनी

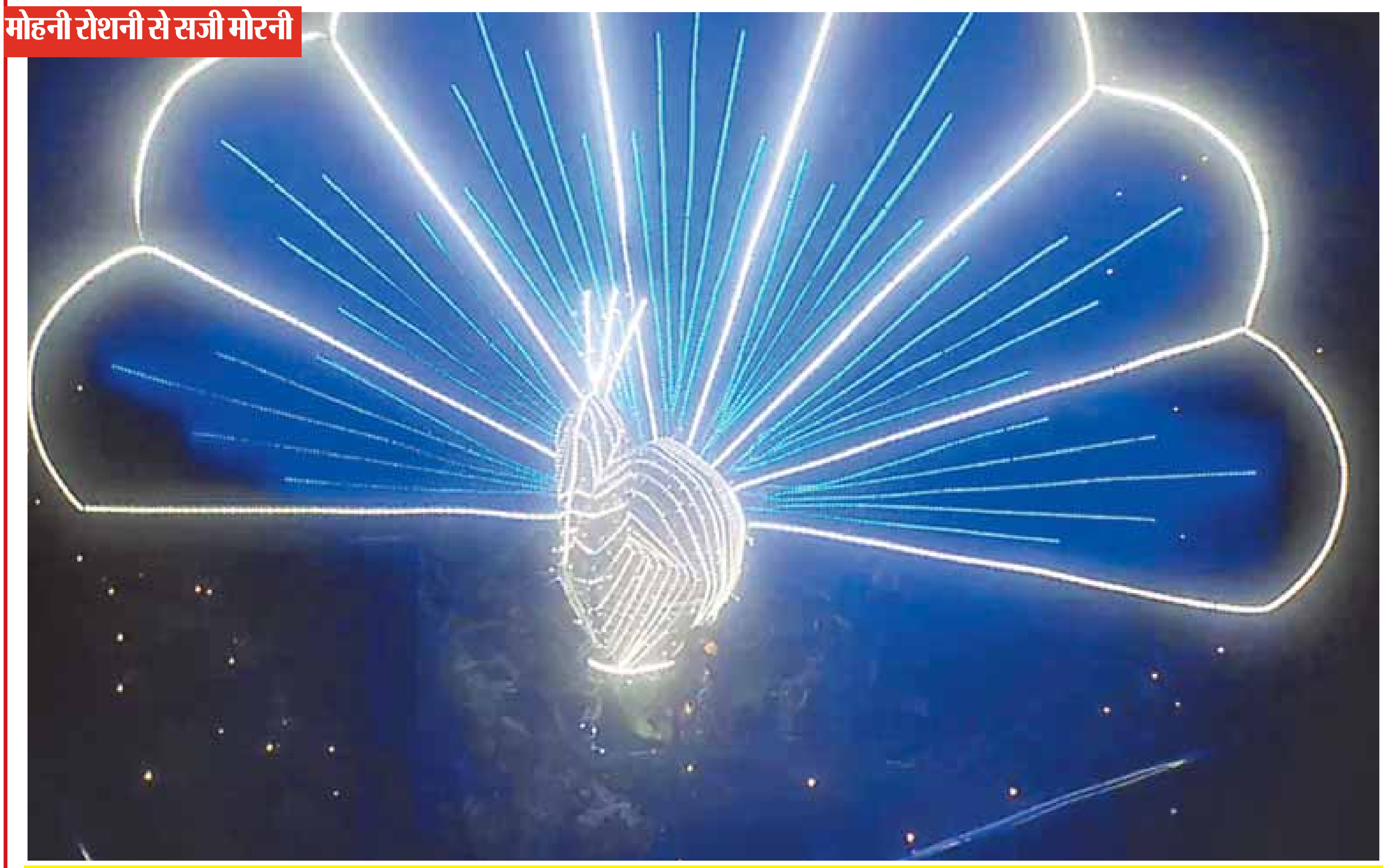

जीआईएस 2025 के मेहमानों के स्वागत के लिए सजा राजधानी का व्यापम चौराहा, यहां विशाल मोरनी की साज-सज्जा आकर्षक का केंद्र बनी हुई है। फोटो: आशीष चौधरी

सुप्रभात

पार करनी है हमें
विद्रूपताओं की नदी
हम नए बदलाव का
संकल्प ले
आगे बढें
कोशिशों के पुल गढ़ें

एक से जब एक मिल
ग्यारह बनें
तो बात हो
दूर हो अँधियार
नूतन भोर की
शुरुआत हो

अब समय है
हम प्रगति की
सीढ़ियाँ मिलकर चढ़ें
कोशिशों के पुल गढ़ें

क्या मिला
यह छोड़,
बोयें आज हम कल के लिए
कुछ करें ऐसा कि
फिर से
खिलखिलाएँ हाशिए

कंटकों का
दोष क्यों
केवल बबूलों पर मढ़ें
कोशिशों के पुल गढ़ें

कबतलक
हम सिर्फ़ बाँचेंगे
विमर्शों की कथा
एक हो पाई
नहीं क्यों
आपकी-मेरी व्यथा

सोच कुछ ऐसा
चलो हम
एक-दूजे को पढ़ें
कोशिशों के पुल गढ़ें।

- गरिमा सक्सेना

पीएम मोदी का मप्र आगमन आज

सीएम मोहन यादव ने लिया जीआईएस तैयारियों का जायजा कर,देखी व्यवस्थाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) की तैयारियों का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने समिट स्थल और उद्योगपतियों, निवेशकों के रुकने वाले स्थानों को देखा।

इसके बाद कहा है कि पीएम नरेंद्र मोदी का आज भोपाल आगमन हो रहा है। यह प्रदेशवासियों के लिए गौरव का क्षण है। हम उनका हार्दिक स्वागत-अभिनंदन करते हैं। समिट की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। प्रधानमंत्री भोपाल में प्रवास भी करेंगे। इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए हर स्तर पर व्यापक व्यवस्थाएं की जा रही हैं।

सबसे पहले कुशाभाऊ ठाकरे सभागार पहुंचे- मुख्यमंत्री डॉ. यादव सबसे पहले कुशाभाऊ ठाकरे सभागार पहुंचे। यहां पीएम नरेंद्र मोदी रविवार शाम को बीजेपी सांसदों, विधायकों और अन्य पदाधिकारियों के साथ संवाद करने वाले हैं। इसके बाद सीएम तद्रूस की तैयारियों का निरीक्षण करने मानव संग्रहालय पहुंचे। यहां GIS के लिए बनाए गए पवेलियन, मुख्य सभागार, विभागीय सेक्टर सम्मेलन स्थल समेत अन्य कार्यक्रम स्थलों का निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिए। शनिवार शाम को ही सीएम यादव सदर मंजिल में जीआईएस की तैयारियों का निरीक्षण करेंगे। यहां देश-विदेश से आने वाले निवेशकों के रुकने और बैठक की व्यवस्था की गई है।

लोक कला दलों की होगी प्रस्तुति- समिट के पहले दिन 24 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय में सुबह 8 बजे से स्थानीय संस्कृति को प्रदर्शित करते लोक कला दलों की प्रस्तुतियां आयोजित की जाएंगी।

'अमृतस्य मध्यप्रदेश' की प्रस्तुति की तैयारियां

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में निवेशकों, उद्योगपतियों और अतिथियों को प्रदेश की ऐतिहासिक विरासत और समृद्ध संस्कृति का अनुभव कराने के लिए विशेष रूप से संयोजित 'अमृतस्य मध्यप्रदेश' नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी जाएगी। इसकी तैयारियां भी तेजी से चल रही हैं। प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत, विविधता और पर्यटन स्थलों की खूबसूरती को प्रसिद्ध कोरियोग्राफर मैत्री पहाड़ी के निर्देशन में 100 से अधिक कलाकार अनूठे रूप में दिखाएंगे। इसके साथ ही आयोजन स्थल इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय में प्रदेश के पारंपरिक और स्थानीय लोकनृत्य, मटकी नृत्य, करमा जनजातीय नृत्य आदि की प्रस्तुति एक विशेष आकर्षण होगी।

शहर में सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को भोपाल आएंगे। प्रधानमंत्री के प्रवास के दौरान मार्ग परिवर्तित रहेंगे। यात्री बसों को भी परिवर्तित मार्गों से गुजारा जाएगा। इसके तहत स्टेट हैंगर से कुशाभऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर तक आवागमन के दौरान यात्री बसों की डायवर्सन व्यवस्था-(समय दोपहर ढाई बजे)।

हलालपुर तक आएंगी इंदौर, उज्जैन से आने वाली बसें

इंदौर, उज्जैन से आने-जाने वाली यात्री बसों का हलालपुर बस स्टैंड से आगे लालघाटी की ओर प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। ये बसें हलालपुर बस स्टैंड पर समाप्त होंगी। राजगढ़-ब्यावरा मार्ग की ओर से हलालपुर बस स्टैंड आने-जाने वाली यात्री बसें मुबारकपुर बायपास तिराहा से खजूरी बायपास तिराहा से बैरागढ़ मार्ग होते हुए हलालपुर बस स्टैंड तक जा सकेंगी।

नादरा बस स्टैंड यहां से जाएंगी बसें

राजगढ़-ब्यावरा मार्ग की ओर से नादरा बस स्टैंड आने-जाने वाली बसें मुबारकपुर बायपास तिराहा से गांधीनगर तिराहा, जेपी नगर तिरहा से नादरा बस स्टैंड की ओर आ-जा सकेंगी। मालवाहक, भारी, एवं अनुमति प्राप्त वाहन-(समय दोपहर ढाई बजे)। रोशनपुरा चौराहे से पोलीटेक्निक चौराहा, कमलापार्क, रेतघाट, लालघाटी, पॉलीटेक्निक चौराहा से गांधीपार्क तिराहा तक आवागमन पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा।

महाशिवरात्रि से पहले प्रयागराज में फिर से लग गया श्रद्धालुओं का तांता

4 दिन हैं बाकी...फिर महा 'सैलाब'

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ अब अपने अंतिम दिनों में आ चुका है, चार दिन बाद इसका समापन हो जाएगा। लेकिन इन चार दिनों में ऐसा माना जा रहा है कि प्रयागराज में करोड़ों लोगों का एक ऐसा जनसैलाब आने वाला है कि कई पुराने रिकॉर्ड ध्वस्त हो जाएंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि अब महाशिवरात्रि आने को है और उस दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आस्था की डुबकी लगानी है। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने शनिवार को पवित्र त्रिवेणी में सपरिवार आस्था की डुबकी लगाई। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी और अन्य नेताओं के साथ संगम स्नान किया और मां गंगा की पूजा अर्चना की। इसके अलावा उन्होंने बड़े हनुमान मंदिर और अक्षयवट के भी दर्शन-पूजन किया और लोककल्याण की कामना की।

आखिरी वीकेंड पर श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ गई है। मेला क्षेत्र के बाहरी हिस्सों में भीषण जाम लगा हैं। यमुना नदी पर बने ब्रिज की ओर जाने वाला रास्ता करीब 7 घंटे से जाम है। लखनऊ से आई एक महिला ने बताया- शहर के बाहर बस ने उतार दिया। इसके बाद शटल बस से मेले के लिए रवाना हुई। बस में खड़े होकर आना पड़ा। आधे घंटे की दूरी तय करने में 4 घंटे लगे। प्रयागराज के सभी 7 एंट्री पॉइंट्स पर बाहर से आने वाली गाड़ियों को रोक दिया जा रहा है।

शहर से बाहर बनी पार्किंग में गाड़ी पार्क करनी पड़ रही। यहां से संगम की दूरी 10 से 12 किमी है। एंट्री पॉइंट्स पर रोके गए श्रद्धालुओं को कम से कम 10-12 किमी तक पैदल चलना पड़ रहा है।हालांकि, उनकी सुविधा के लिए प्रशासन शटल बसें, ई-रिक्शा, ऑटो, ठेले को चलने दे रहा है। हजारों की संख्या में बाइक वाले भी सवारी ढो रहे हैं। लेकिन, ये सभी मनमाना किराया वसूल रहे हैं। ऑटो और ई-रिक्शा वाले एक किमी के 100 रुपए तक वसूल रहे तो बाइक वाले 50 रुपए मनमाना किराया वसूल रहे हैं।ऐसे में लोगों को एंट्री पॉइंट्स से मेले तक जाने के लिए 500 रुपए से लेकर 1000 रुपए तक देने पड़ रहे हैं।

प्रयागराज में यूपी बोर्ड की 24 फरवरी की परीक्षाएं स्थगित

- 9 मार्च को होगा एग्जाम, शिफ्ट-टाइमिंग में कोई बदलाव नहीं

प्रयागराज (एजेंसी)। 24 फरवरी को प्रयागराज में होने वाली यूपी बोर्ड की 10वीं और 12वीं की परीक्षाएं महाकुंभ के चलते स्थगित कर दी गई हैं। ये परीक्षाएं अब 9 मार्च, 2025 को आयोजित की जाएंगी। माध्यमिक शिक्षा मंत्री गुलाब देवी ने आज, 21 फरवरी की देर शाम नोटिस जारी कर इसकी जानकारी दी। बोर्ड परीक्षाओं के शिफ्ट और समय में कोई बदलाव नहीं हुआ है। परीक्षाएं उसी शिफ्ट में होंगी, जिसमें पहले निर्धारित थीं। दोनों शिफ्टों में होनी थी परीक्षा 24 फरवरी को दो शिफ्टों यानी सुबह 8ः30 बजे से दोपहर 11ः45 बजे और दोपहर 2 बजे से शाम 5ः15 बजे तक परीक्षाएं आयोजित होनी थी।

दुबई में भारत-पाकिस्तान का हाईवोल्टेज मुकाबला आज

चैंम्पियंस ट्रॉफी-2025

दुबई, एजेंसी। भारत और पाकिस्तान के बीच रविवार (23 फरवरी) को दुबई में चैंम्पियंस ट्रॉफी का महामुकाबला होना है. इस बहुप्रतीक्षित मैच के लिए पाकिस्तानी क्रिकेट टीम पूरी तरह से तैयार है. क्योंकि एक हार से उसका पूरा गणित बिगढ़ जाएगा. इस थ्रिलर मैच से पहले पड़ोसी देश ने दुबई में स्पेशल तैयारी की. चैंम्पियंस ट्रॉफी में न्यूजीलैंड से पहला मैच गंवाने के बाद अब पाकिस्तान टीम भारत के खिलाफ 23 फरवरी को दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेलने के लिए उतरेगी. वहीं भारतीय टीम ने चैंम्पियंस ट्रॉफी के पहले लीग मुकाबले में बांग्लादेश को पटखनी दी. दोनों देशों के बीच होने वाले इस हाईप्रोफाइल मुकाबले से पहले पाकिस्तान ने खास तैयारी की. दरअसल, पाकिस्तान के लिए यह मैच एक तरह से करो या मरो जैसा होगा. क्योंकि अगर वो भारतीय टीम से हारते हैं तो उनके लिए टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचना बेहद मुश्किल हो जाएगा. न्यूजीलैंड के खिलाफ शुरुआती मैच में पाकिस्तानी टीम को 60 रन से हार मिली थी. वैसे पाकिस्तानी टीम ने शुक्रवार को एक एक्सटेंडेड प्रैक्टिससेशन आयोजित किया, यानी अपनी तैयारियों का सत्र बढ़ा दिया.

लाहौर में बजा भारत का राष्ट्रगान, चैंपियंस ट्रॉफी में 'ब्लंडर'

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान में खेली जा रही चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान भयंकर भूल हुई है। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच लाहौर में मैच से पहले भारत का राष्ट्रगान बजा दिया गया। हालांकि जैसे ही इस बात का एहसास हुआ तुरंत इसे बंद किया गया। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया का राष्ट्रगान बजाया गया। हालांकि लोगों ने इस गलती को मोबाइल पर रिकॉर्ड कर लिया। इसकी क्लिप सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। लोग भी इस हैरतअंगेज नजारे को देखकर खूब चुटकी ले रहे हैं। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच यह मैच लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में खेला जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया की टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। मैच शुरू होने से पहले दोनों टीमों के देशों का राष्ट्रगान बजाने की परंपरा है। ऐसे में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड का राष्ट्रगान बजाया जाना था। लेकिन अचानक से ऑस्ट्रेलिया की जगह भारत का राष्ट्रगान बजने लगा। जब तक अधिकारियों को इस गलती का एहसास होता तब तक भारत का राष्ट्रगान बज चुका था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 23 फरवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस पर चीफ गेस्ट होंगे मोदी

- घोषणा होते ही तालियों से गूंज उठी वहां की संसद

पोर्टलुई (एजेंसी)। मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीनचन्द्र रामगुलाम ने शुक्रवार को इस बात की घोषणा की है कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मॉरीशस के 57वें राष्ट्रीय दिवस समारोह में चीफ गोस्ट के तौर पर शामिल होंगे। पीएम मोदी 11-12 मार्च को पोर्ट लुईस का दौरा करने वाले हैं। उन्होंने संसद में इसका ऐलान किया। पूरे सदन ने तालियों की गड़गड़ाहट से इस फैसले का स्वागत किया। नवीनचन्द्र रामगुलाम ने संसद में इस बारे में जानकारी देते हुए कहा कि मोदी के लिए ऐसे कार्यक्रम में भाग लेना विशेष सम्मान की बात है, खासकर जब उनका शेड्यूल काफी व्यस्त है। हाल ही में वह पेरिस और अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में शामिल हुए थे। रामगुलाम ने कहा, मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मेरे निमंत्रण पर रत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमारे राष्ट्रीय दिवस समारोह के लिए अतिथि विशेष बनने के लिए सहमति दी है। यह हमारे देश के लिए एक सम्मान की बात है कि हम इस प्रतिष्ठित व्यक्तित्व की मेजबानी कर रहे हैं। वह अपनी अत्यधिक व्यस्तता और पेरिस और अमेरिका के हालिया दौरे के बावजूद इस सम्मान को हमें दे रहे हैं। उन्होंने आगे कहा,पीएम मोदी का यह दौरा भारत और मॉरीशस के बीच मजबूत और स्थिर संबंधों का प्रतीक है।

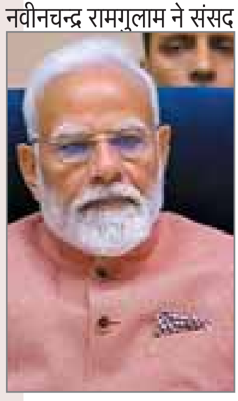

ओटीटी पर अश्लील कंटेंट दिखाने वाले सावधान!

नया कानून लाने की तैयारी में सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लील और हिंसक कंटेंट दिखाने को लेकर बहस गरमाई हुई है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दुरुपयोग को लेकर चिंता जताई जा रही है। इस बीच, सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने सभी प्रकार के मीडिया से संबंधित मौजूदा कानूनों की समीक्षा शुरू कर दी है। संसद सदस्यों और राष्ट्रीय महिला आयोग जैसी संस्थाओं की ओर से यह मुद्दा उठाया गया। साथ ही, आम लोगों ने ऐसी सामग्री पर अपनी चिंता जताई। कई हाई कोर्ट्स और सुप्रीम कोर्ट में भी इस मसले पर चर्चा हो चुकी है। अब मंत्रालय ऐसे घटनाक्रमों पर काफी फोकस कर रहा है। मौजूदा वैधानिक प्रावधानों और नए कानूनी ढांचे की जरूरत बताई जा रही है। वैसे तो मीडिया कंटेंट को रेगुलेट करने के लिए कुछ कानूनी प्रावधान पहले मौजूद हैं। मगर, अब इन्हें और ज्यादा सख्त व प्रभावी बनाने की मांग उठी है। ऐसे में मंत्रालय मौजूदा कानूनी ढांचे की जांच कर रहा है और चिंताओं को दूर करने के लिए नया कानून लाने की तैयारी है। रिपोर्ट में बताया गया कि फिलहाल इस मामले को लेकर गहराई से विचार-विमर्श किया जा रहा है। इसके बाद एक नोट समिति के पास भेजा जाएगा। केन्द्र ने निषिद्ध सामग्री प्रसारित करने से परहेज करने को कहा था।

उत्तराखंड में फॉरेस्ट फंड से खरीदे आई फोन-लैपटॉप

कैग की रिपोर्ट में चौंकाने वाले खुलासे

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड बजट सत्र 2025 के दौरान नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक यानी सीएजी की रिपोर्ट पेश की गई। केंद्रीय ऑडिट में बड़े पैमाने पर वित्तीय अनियमितताएं पाई गई हैं। इसमें वन संरक्षण के लिए निर्धारित धन का इस्तेमाल आईफोन और ऑफिस सजावट के सामान खरीदने के अलावा अन्य नियमों का उल्लंघन भी शामिल है। 2022 के रिकॉर्ड की जांच करने वाली इस रिपोर्ट में कई सारे उदाहरण सामने आए हैं। इसमें फारेस्ट के फंड को वनीकरण से संबंधित कामों पर खर्च की बाजय अन्य मदों पर खर्च किया गया। टैक्स पेमेंट के लिए जीका प्रोजेक्ट को 56.97 लाख रुपये रिडायरेक्ट किए गए। यह पैसा इसके लिए नहीं था। डीएफओ अल्मोड़ा ऑफिस में बिना किसी मंजूरी के सोलर फेंसिंग पर 13.51 लाख खर्च किए गए। विभाग को फंड मिलने के बाद उसका उपयोग एक साल के अंदर करना होता है, लेकिन 37 मामलों में इस फंड का इस्तेमाल करने में 8 साल लगा दिए गए। केन्द्र ने रोड लाइन के लिए औपचारिक सहमति दी थी।

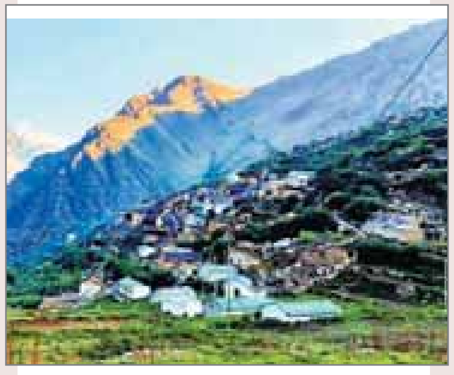

नवनियुक्त सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारियों के आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए पूरी क्षमता से करें कार्य : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अभियोजन अधिकारियों की न्याय प्रणाली में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। न्यायालय, पुलिस और अभियोजन मिलकर पीड़ित को न्याय दिलाते हैं। उन्होंने कहा कि न्यायालय, शासन, प्रशासन और अभियोजन के आपसी समन्वय से ही पीड़ितों को न्याय मिलेगा और प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति को और अधिक बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अभियोजन अधिकारी विधिक प्रक्रियाओं, अभियोजन कार्यों और न्यायिक प्रणाली की बारीकियों से अवगत हों, जिससे वे अपने दायित्वों को कुशलतापूर्वक निर्वहन कर सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को कान्हासैंया स्थित केन्द्रीय पुलिस प्रशिक्षण अकादमी में 210 से अधिक नवनियुक्त सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारियों के आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ सत्र को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस श्री जे.के. माहेश्वरी, म.प्र. हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस श्री सुरेश कुमार कैत एवं म.प्र. हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस श्री विवेक अग्रवाल के साथ दीप प्रज्जवलित कर इस 45 दिवसीय आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने अध्यक्षयीय उद्बोधन में कहा कि देश में सुशासन स्थापित करने में हमारी माननीय न्यायपालिका की अत्यंत सराहनीय भूमिका है। लोक अभियोजन अधिकारियों के पास यह स्वर्णिम अवसर है कि वे पीड़ितों और जरूरतमंदों को अपनी युवा ऊर्जा, अपने बौद्धिक ज्ञान, मेधा और क्षमता से तत्परतापूर्वक न्याय दिलाएं। न्यायपालिका के आदेशों का अक्षरशः पालन कराना ही वास्तविक सुशासन है। न्यायपालिका की मदद और मार्गदर्शन से देश में लोकतंत्र की परंपरा और मजबूत हुई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि देश ने अनेकों ऐसे अवसर देखें हैं जब न्याय पालिका के आदेशों को बिना किसी देरी के बड़ी शांति से लागू कराकर केन्द्र सरकार ने सुशासन के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये है। इससे देश में लोकतंत्र की परंपरा भी मजबूत हुई है। उन्होंने धर्मो रक्षति रक्षतः का संदर्भ देते हुए कहा कि धर्म उसी की रक्षा करता है, जो धर्म की रक्षा करता है। यह पारस्परिक भाव ही सुशासन की मूल नीति है। उज्जैन में महाराज विक्रमादित्य ने सदियों पहले सुशासन के प्रतिमान स्थापित किए थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमने देश में इस भाव को पुनः जीवंत होते हुए देखा है। देश में अमृत काल चल रहा है और इस दौर में सबके कल्याण, सबके हित, सबको न्याय दिलाने के लिए एक सक्षम नेतृत्व उपलब्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नए अपराधिक कानूनों के सुचारू क्रियान्वयन के लिए सरकार हर जरूरी प्रबंध करेगी और न्याय तंत्र को बेहतर बनाने के लिए जरूरी संसाधन भी उपलब्ध कराएगी।

शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस श्री जे.के. माहेश्वरी ने कहा कि न्याय पाना सबका अधिकार है। यह हमारा मानवीय अधिकार भी है। न्याय पाने की मंशा हमारी आत्मा में, हमारे दिलों में बसना चाहिए। सम्राट विक्रमादित्य ने भी अपनी न्याय प्रणाली से सबके दिलों में न्याय प्रणाली के प्रति आस्था जागृत की थी। सरकार की महिमा उसकी न्याय प्रणाली की बेहतरी से ही दृष्टिगोचर होती है। नवनियुक्त सहायक लोक अभियोजन अधिकारी अपने कौशल को सुधारें और न्याय प्रणाली की बेहतरी के लिए काम करें। उन्होंने कहा कि न्याय एक दर्शन है, एक संकल्प है। नए अभियोजन अधिकारियों को इस न्याय संकल्प से जुड़ना चाहिए और सबको न्याय दिलाने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. यादव से ई-कोर्ट और ई-लायब्रेरी सहित कोर्टस में अधिवक्ताओं और अभियोजकों की समुचित बैठक व्यवस्था के लिए प्रबंध किए जाने की मांग रखी। विशेष अतिथि म.प्र. हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस (मुख्य न्यायाधीश) जस्टिस श्री सुरेश कुमार कैत ने कहा कि अभियोजन अधिकारी न्याय प्रणाली की प्राथमिक कड़ी हैं। वे जो साक्ष्य प्रस्तुत करेंगे, उसी से केस की मजबूती तय होगी। उन्होंने कहा कि पीड़ितों को न्याय दिलाने में मजबूत साक्ष्य लेकर आने की जिम्मेदारी अभियोजन की होती है। इसीलिए पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए अभियोजन अधिकारी समर्पित होकर अपने कर्तव्य को अंजाम दें। दोष सिद्धि दर बढ़ाएं, जिससे अपराधियों को सजा मिले। जस्टिस श्री कैत ने कहा कि अभियोजन अधिकारियों को न्याय प्रणाली के सुचारू क्रियान्वयन और सत्य की खोज में न्यायाधीशों का मददगार बनना चाहिए।

एमपी-यूपी बॉर्डर पर फिर लगा 10 किमी जाम

रीवा (नप्र)। रीवा में एमपी-यूपी बॉर्डर पर शनिवार को एक बार फिर 10 किलोमीटर लंबा जाम लग गया। शनिवार को फिर महाकुंभ जाने वाले यात्रियों की संख्या बढ़ गई। इसके बाद रीवा-प्रयागराज मार्ग पर भारी वाहनों की एंट्री रोक दी गई है। उन्हें कटनी से ही डायवर्ट कर हनुमना मार्ग से निकाला जा रहा है।

प्रयागराज में पार्किंग फुल, वाहनों को मिर्जापुर डायवर्ट किया- एडिशनल एसपी विवेक सिंह ने बताया कि महाकुंभ के अंतिम दौर और इसके पहले आखिरी वीकेंड में भारी भीड़ की संभावना को देखते हुए पहले से ही तैयारियां शुरू कर दी गई थी। भारी वाहनों को कटनी से ही वैकल्पिक मार्ग पर भेजा जा रहा है।

बता दें कि प्रयागराज में 13 जनवरी से शुरू हुआ महाकुंभ 26 फरवरी तक चलेगा। शनिवार सुबह तक स्थिति नियंत्रण में थी। दोपहर 12 बजे के बाद वाहनों की संख्या बढ़ गई। जोगनिहाई टोल से हर घंटे 1500 वाहन निकल रहे हैं। पुलिस और प्रशासन मिलकर जाम खुलवाने की कोशिश कर रहे हैं।

टोल प्लाजा से 24 घंटे में निकले 35 हजार वाहन- एडिशनल एसपी विवेक लाल ने बताया कि महाकुंभ का आखिरी वीकेंड होने की वजह से पिछले 24 घंटे में एमपी-यूपी बॉर्डर चाकघाट से 35 हजार से ज्यादा वाहन निकल चुके हैं। शनिवार सुबह से हर घंटे जोगनिहाई टोल प्लाजा और झिरिया टोल प्लाजा से होकर 1500 वाहन निकल रहे हैं। यही वजह है कि सड़कों पर ट्रैफिक बढ़ रहा है। लेकिन हम स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए हैं।

वाहनों को शहडोल और सीधी होते हुए हनुमना की ओर भेजा जा रहा है। हनुमना और मिर्जापुर से आने वाले वाहनों के लिए भी यही रूट निर्धारित किया है। मनगवां से मिर्जापुर की ओर वाहनों का रूट डायवर्जन जारी है।

कुंभ यात्रियों की सुविधा के लिए रेस्ट पॉइंट बनाए- रीवा कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि कुंभ यात्रियों की सुविधा के लिए रेस्ट पॉइंट पर विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं। बच्चों के लिए दूध, आवश्यक दवाइयां और खाद्य सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। प्रयागराज में पार्किंग स्थल पूर्ण रूप से भर चुके हैं। इस कारण वाहनों को मिर्जापुर की ओर भेजा जा रहा है, जहां पार्किंग की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध है। नारी-वारी मार्ग पर यातायात की स्थिति सामान्य नहीं है।

हरियाणा के सीएम की सुरक्षा में चूक पर बवाल

सवालों में घिरी चंडीगढ़ पुलिस, 15 मिनट तक खड़ा रहा काफिला

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी की सुरक्षा में चूक को लेकर बवाल मच गया है। चंडीगढ़ पुलिस सवालों में घिर गई है। हरियाणा सरकार ने भी चंडीगढ़ पुलिस के आगे कड़ा एतराज जताया है। हरियाणा सरकार की ओर से कहा गया कि सीएम सैनी के हरियाणा निवास जाते वक्त रूट क्लियर कराना चंडीगढ़ पुलिस की जिम्मेदारी थी। इसके बावजूद जब वे संत कबीर कुटीर से हरियाणा निवास के लिए आए तो पंजाब भवन के बाहर गेट बंद था। इस गेट की चाबी पंजाब सरकार की तरफ से लगाए गार्ड के पास थी। सैनी ने शुक्रवार को कहा कि पंजाब भवन का गेट बंद होना गलत था। गेट बंद होने से बुधवार की रात सीएम नायब सैनी का काफिला 15 मिनट तक हाई सेंसिटिव जोन में रोड पर खड़ा रहा। इस दौरान केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर भी उनके साथ थे। मुख्यमंत्री नायब सैनी और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल का काफिला आधी रात को जिस जगह रुका, वहां से हरियाणा और पंजाब सीएम हाउस, दोनों राज्यों की विधानसभा, सचिवालय और पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट भी कुछ ही दूरी पर हैं। इसके अलावा पास में ही एमएलए हॉस्टल भी हैं। दोनों नेताओं को जेड प्लस सिक्युरिटी मिली है। इसके बावजूद उनकी मूवमेंट के लिए प्रोटोकॉल के तहत इंतजाम नहीं किए। सीएम नायब सैनी ने कहा कि पंजाब भवन वाला गेट बंद था। वह गेट बंद नहीं होना चाहिए।

'एक देश, एक चुनाव' के पक्ष में बड़े अभियान की है तैयारी

कैसे बने जनता का मूड, बीजेपी ने तैयार कर लिया प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद की संयुक्त समिति की ओर से 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' पर 2 विधेयकों की जांच जारी है। इस बीच, सत्तारूढ़ भाजपा ने एक साथ चुनाव कराने को लेकर देश भर अभियान शुरू कर किया है जिसका मकसद इसके पक्ष में जनभावना तैयार करना है। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में दिल्ली में भाजपा नेताओं की बीते महीने बैठक हुई थी, जहां पार्टी के जनसंपर्क कार्यक्रम पर चर्चा हुई। यह तय किया गया कि विभिन्न सामाजिक संगठनों, गैर सरकारी संगठनों, शिक्षाविदों, वकीलों और व्यापारिक समूहों से बातचीत की जाएगी।

संवाद कार्यक्रम आयोजित होंगे, जिनमें भाषण देने के लिए बीजेपी नेताओं को भेजा जाएगा। इतना ही नहीं, आम लोगों से इस पर अपनी राय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को भेजने की अपील की जाएगी। आखिर भाजपा के इस राष्ट्रव्यापी अभियान का और क्या उद्देश्य है। इसके जवाब में बीजेपी के सीनियर नेता ने कहा, हमारे पास केंद्र और कई राज्यों में बहुमत है। ऐसे में विधेयक को मंजूरी दिलाने में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए। मगर, हम एक राष्ट्र, एक चुनाव को जन आंदोलन बनाना चाहते हैं। विधेयकों की जांच के लिए शीतकालीन सत्र के दौरान उन्हें संयुक्त संसदीय पैनल को भेजा गया था, जिसकी तीसरी बैठक 25 फरवरी को होनी है।

राष्ट्रीय स्तर पर इस अभियान के देखरेख की जिम्मेदारी शिवराज सिंह चौहान, पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सुनील बंसल और राष्ट्रीय सचिव ओम प्रकाश धनखड़ को सौंपी गई है। बिहार और मेघालय के पूर्व राज्यपाल फागू चौहान के नेतृत्व में पार्टी नेताओं की टीम बनाई गई है जिसके साथ धनखड़ की मीटिंग होने वाली है।

पीएम के प्रिंसिपल सेक्रेटरी बनाए गए शक्तिकांत दास

6 साल रिजर्व बैंक के गवर्नर रहे दिसंबर में रिटायर हुए

नई दिल्ली (एजेंसी)। 1 अप्रैल 2024 को मुंबई में आरबीआई के 90 साल पूरे होने के अवसर पर आयोजित एक समारोह के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने स्मृति चिन्ह भेंट किया था। आरबीआई के पूर्व गवर्नर शक्तिकांत दास को शनिवार को भारत के प्रधानमंत्री का प्रिंसिपल सेक्रेटरी नियुक्त किया गया। केंद्र सरकार में अपॉइंटमेंट कमेटी की तरफ से जारी नोटिफिकेशन में कहा गया कि प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव-2 के रूप में शक्तिकांत दास की नियुक्ति को मंजूरी दी गई है। उनकी नियुक्ति प्रधानमंत्री के कार्यकाल के साथ या अगले आदेश तक जारी रहेगी। आरबीआई के पूर्व गवर्नर शक्तिकांत दास का कार्यकाल 10 दिसंबर को समाप्त हुआ था।

योगी ने गोला गोकर्णनाथ कॉरिडोर की रखी आधारशिला

लखीमपुर खीरी में स्थापित होगा पर्यावरण अनुकूल औद्योगिक संयंत्र

लखीमपुर खीरी (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कई विकास योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। छोटी काशी के रूप में विख्यात गोला गोकर्णनाथ मंदिर कॉरिडोर का उद्घाटन करने पहुंचे सीएम योगी ने विपक्ष पर करारा हमला बोला। कुंभ मेला को लेकर उठ रहे सवालों पर करारा तंज कसा। सीएम ने कुंभी में देश के पहले बायो पॉलिमर संयंत्र का शिलान्यास किया। सीएम योगी ने कहा कि एक ओर पूरी दुनिया प्रयागराज महाकुंभ में भागीदार बन रही है, वहीं आज कुंभी में ही आपने महाकुंभ रच दिया है। सीएम योगी ने कहा कि मुझे यहां आना 11 बजे था, लेकिन दो घंटे पहले 9 बजे ही आ गया। गोला के बाद प्रयागराज जाना है। लोगों की भीड़ देखकर सीएम योगी ने कहा कि यह दृश्य अपने आप में अद्भुत है। कुंभी में निवेश का महाकुंभ नजर आ रहा है। 2850 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाला प्लांट अपनी तरह का यह पहला निवेश है। इसके लिए बलरामपुर चीनी मिल लिमिडेट और लखीमपुर खीरी के लोगों को बधाई। सीएम योगी ने छोटी काशी यानी गोला गोकर्णनाथ पहुंचकर पूजा-अर्चना भी की। बलरामपुर चीनी मिल लिमिटेड की ओर से यह संयंत्र 2850 करोड़ रुपये की लागत से बनाया जा रहा है। यह जैविक तरीके से पॉलिमर उत्पादन का कार्य करेगा। इससे पर्यावरण के अनुकूल औद्योगिक क्रांति को बढ़ावा मिलेगा। कुंभी के बाद सीएम योगी ने गोला गोकर्णनाथ पहुंचकर शिव मंदिर कॉरिडोर का शिलान्यास किया। इसके अलावा, 1620 करोड़ रुपये की 373 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया।

टनल हादसा, 6 मजदूर फंसे

एंट्री पॉइंट से 14 किमी दूर 3 मीटर हिस्सा गिरा

4 दिन पहले काम शुरू हुआ था, बढ़ गई मुश्किल

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के नागरकुरनूल जिले में शनिवार सुबह श्रीशैलम लेफ्ट बैंक कैनाल टनल प्रोजेक्ट का एक हिस्सा गिर गया। जिसमें 6 मजदूर फंस गए। हादसा सुरंग के एंट्री पॉइंट से 14 किमी अंदर हुआ। अधिकारियों के मुताबिक, छत का करीब तीन मीटर हिस्सा ढहा है। टनल का काम काफी समय से रुका हुआ था। चार दिन पहले ही दोबारा काम शुरू किया गया। नागरकुरनूल के एसपी वैभव गायकवाड़ ने बताया कि सिंचाई परियोजना का काम करने वाली कंपनी की 2 रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंच गई हैं। कंपनी के मुताबिक, घटना के दौरान 50 मजदूर घटनास्थल पर मौजूद थे। इनमें से 43 सुरक्षित बाहर आ गए हैं। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने घटना पर दुख जताया है। मुख्यमंत्री कार्यालय के मुताबिक, उन्होंने जिला कलेक्टर, फायर ब्रिगेड और सिंचाई विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचकर राहत बचाव कार्य में लगे हुए हैं। मंत्री कोमाटिरेड्डी वेंकट रेड्डी ने एक बयान में कहा, यह दुर्घटना श्रीशैलम से देवरकोंडा जाने वाली सुरंग में हुई है।

बदमाशों ने गो-डाउन का ताला तोड़ा

दो लैपटॉप और एलईडी टीवी ले उड़े, अस्पताल से भी लैपटॉप चुराया

इंदौर (नप्र)। जूनी इंदौर थाना क्षेत्र में बदमाशों ने एक गोडाउन को निशाना बनाया। बदमाशों ने गोडाउन का ताला तोड़ा और वहां रखे दो लैपटॉप और एलईडी टीवी उड़ा ले गए। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने मामले में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जूनी इंदौर पुलिस के मुताबिक मामला पंचशील नगर का है। खातीवाला टैंक निवासी धीरज मोटवानी की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज किया है। धीरज का पंचशील नगर में गोडाउन है। यहां पर अज्ञात बदमाशों ने वारदात को अंजाम देते हुए गोडाउन का ताला तोड़ा और अंदर घुस गए। बदमाश गोडाउन में रखे दो लैपटॉप और एलईडी उड़ा ले गए। धीरज का घटना का पता चला तो उन्होंने पुलिस में इसकी शिकायत की। पुलिस बदमाशों की तलाश कर रही है। इधर, बाणगंगा थाना पुलिस के मुताबिक डॉ.पलक सोडानी की शिकायत पर भी केस दर्ज किया गया है। डॉक्टर ने अपना लैपटाप अरविंदो अस्पताल के फोर्थ फ्लोर के केबिन में रखा था और वह ड्यूटी पर चली गई थी। इसके बाद जब वे लौटी तो उनके केबिन में रखा लैपटॉप नहीं मिला। अज्ञात बदमाश उनका लैपटाप चोरी कर ले गया। घटना के बाद पुलिस अस्पताल में लगे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बदमाश की तलाश कर रही है।

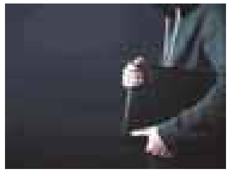

इंदौर-देवास के किसान 25 फरवरी को करेंगे प्रदर्शन

क्षिप्रा नदी का पानी छोड़ने को लेकर नाराजगी

इंदौर (नप्र)। इंदौर और देवास के किसान 25 फरवरी को क्षिप्रा नदी का पानी छोड़ने को लेकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। किसानों का आरोप है कि उनके हिस्से का पानी दूसरे जिलों में भेजा जा रहा है। इसको लेकर शुक्रवार को एक बैठक भी हुई। इसमें निर्णय लिया कि गांव-गांव से किसानों को लाकर प्रदर्शन किया जाएगा। नदी के एक ओर इंदौर जिले के तो दूसरी ओर देवास जिले के किसान प्रदर्शन करेंगे। किसानों ने बताया कि मुख्यमंत्री मोहन यादव इंदौर और देवास जिले के हिस्से का शिप्रा का पानी अपने जिले उज्जैन में ले गए हैं। इससे किसान परेशान हैं। जबकि नर्मदा-क्षिप्रा संगम इसलिए किया गया था कि किसानों के लिए पानी क्षिप्रा नदी में छोड़ा जाएगा। किसान नेता हंसराज मंडलोई ने आरोप लगाया कि किसानों के साथ विश्वासघात किया जा रहा है। इसी को लेकर 25 फरवरी को शिप्रा नदी के किनारे पर इंदौर एवं देवास जिले की हाटपीपल्या एवं सांवेर विधानसभा क्षेत्र के किसान धरना-प्रदर्शन करेंगे। इस कड़ी में इंदौर जिले के सेमलिया-चाऊ में शिप्रा नदी के किनारे पर किसान सुबह 10 बजे से 12 बजे तक प्रदर्शन करेंगे एवं इंदौर जिले के अधिकारियों को ज्ञापन सौंपेंगे। इसके बाद में देवास जिले की सीमा में नदी के दूसरे किनारे पर 12 बजे से लगाकर दोपहर 2 बजे तक ग्राम देखना खेड़ी में देवास जिले के किसान प्रदर्शन करेंगे। नर्मदा-क्षिप्रा लिंक को चालू किया जाए।उज्जैनी से उज्जैन तक नर्मदा लाइन सांवेर विधानसभा क्षेत्र के गांव से गई है, उससे क्षेत्र के किसानों को पानी उपलब्ध कराया जाए। हाटपीपल्या विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक गांव में नर्मदा का पानी पहुंचाया जाए।

इंदौर में नर्सरी स्कूल की टीचर से छेड़छाड़

थाने पर पहुंची भीड़, मजदूर को हिरासत में लेकर किया केस दर्ज

इंदौर (नप्र)। इंदौर के रावजी बाजार इलाके के एक स्कूल में महिला टीचर के साथ एक मजदूर और उसके साथी ने छेड़छाड़ कर दी। महिला टीचर को डराया धमकाया गया। इस मामले में महिला टीचर ने यह बात अपने परिचित लोगों को बताई। दोनों मजदूरों की पिटाई कर मामले में भीड़ आरोपियों को थाने लेकर आ गई। यहां पर पुलिस ने आरोपी पर केस दर्ज किया है। एसीपी देवेंद्र धुर्वे के मुताबिक-वेदांत प्री नर्सरी स्कूल में एक फंक्शन के चलते मजदूरों को हायर किया गया था। इसमें विदिशा से मजदूर संदीप शर्मा भी यहां पर काम कर रहा था। यहां पढ़ाने वाली महिला टीचर ने आरोप लगाया कि संदीप ने उनके साथ गलत हरकत कर छेड़छाड़ की। उसने उन्हें कमरे में बंद करने की धमकी दी।बंधक बनाने की कोशिश की। हालांकि, एसीपी ने इस मामले में बंधक बनाने की बात से इनकार किया है। संदीप पर छेड़छाड़ और अन्य गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है।

भीड़ ने आरोपी को पीटा– टीचर के मामले में जब रहवासी ओर अन्य लोगों को जानकारी लगी तो उन्होंने मजदूर की पिटाई कर दी। शुक्रवार देर शाम यहां पर भीड़ पहुंची। जिसमें एएसपी मौके पर पहुंचे और सभी को समझाइश देकर मामले में एफआईआर दर्ज करने की बात कही।

रिटायर्ड टीआई की मौत

बेटे से बोले- घूमने जा रहा हूं, कुछ देर बाद अस्पताल से आया फोन

संभावना जताई कि हार्ट अटैक आया होगा

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पूर्व टीआई की मौत हो गई। हार्ट अटैक से मौत की संभावना जताई जा रही है। वे अपने बेटे से यह कहकर घर से बाहर निकले थे कि, वह घूमने जा रहे हैं। बाद में बेटे के पास फोन आया, जिससे पता चला कि वे अस्पताल में भर्ती हैं। जब बेटा अस्पताल पहुंचा, तो उसे जानकारी मिली कि उनकी मृत्यु हो चुकी है। पुलिस ने मर्ग कायम कर पोस्टमार्टम करवाया। खजराना पुलिस के मुताबिक, मृतक विजय बहादुर मिश्रा (65 वर्ष), निवासी पुलिस टाउनशिप, इंदौर का निधन अज्ञात कारणों से हुआ है। पुलिस पीएम रिपोर्ट का इंतजार कर रही है। उन्होंने अपने बेटे अमित से कहा था कि वह बाहर घूमने जा रहे हैं। काफी देर तक घर न लौटने पर परिवार के लोग चिंतित हो गए। उन्होंने कई बार उनके मोबाइल पर फोन किया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। काफी समय बाद किसी अज्ञात व्यक्ति ने फोन उठाया और बताया कि विजय बहादुर मिश्रा को एमवाय अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उनकी हालत गंभीर है। बेटा तुरंत अस्पताल पहुंचा, जहां पूछताछ करने पर उसे पता चला कि उसके पिता का निधन हो चुका है।

2022 में रिटायर्ड हुए थे विजय बहादुर

खजराना थाने के प्रधान आरक्षक हरिओम द्विवेदी पुलिस ने बताया कि, विजय बहादुर मिश्रा रिटायर्ड टीआई थे। 31 जनवरी 2022 में रिटायर्ड हो चुके थे। मृत्यु का फिलहाल कारण स्पष्ट नहीं हुआ है। पीएम रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। वहीं, संभावना है कि हार्ट अटैक के कारण उनकी मृत्यु हुई है। परिवार से जानकारी मिली है कि उन्हें 2024 में भी अटैक आ चुका था। इधर, पुलिस मामले की जांच कर रही है।

इंदौर भाजपा जिला कार्यकर्ताओं ने देखी फिल्म छावा

राज्यसभा सांसद कविता पाटीदार, विधायक ठाकुर, जिला अध्यक्ष चावड़ा भी मौजूद थे

इंदौर (नप्र)। मराठा सम्राट छत्रपति संभा जी महाराज के विराट व्यक्तित्व, मातृभूमि प्रेम और स्वराज के प्रति संघर्ष पर बनी ऐतिहासिक फिल्म छावा को बीजेपी कार्यकर्ताओं ने महू टोल नाके के पास विक्रम मॉल स्थित फॉरच्यून सिनेमा में देखा। इस दौरान राज्यसभा सांसद कविता पाटीदार, विधायक उषा ठाकुर, जिला अध्यक्ष श्रवण सिंह चावड़ा, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कंचन सिंह चौहान, युवा मोर्चा अध्यक्ष मनोज सिंह ठाकुर मौजूद रहे। जिला अध्यक्ष चावड़ा ने कहा कि, संभाजी महाराज को 'छावा' शेर का बच्चा कहा जाता है, उन्होंने शिवाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात भी स्वराज के नारे को बुलंद रखा।

बिजली कंपनी ले रही सर्विस फीडबैक

रोजाना 500 कस्टमर को फोन लगाकर पूछ रहे समस्या

इंदौर (नप्र)। इंदौर में बिजली कंपनी प्रतिदिन 500 से ज्यादा उपभोक्ताओं से सेवाओं को लेकर फीडबैक ले रही है। इसमें 97 प्रतिशत से ज्यादा उपभोक्ता सेवाओं से संतुष्ट नजर आए। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण मुख्य महाप्रबंधक प्रकाश सिंह चौहान ने बताया कि बिजली सेवाओं के समय पर संचालन और फीडबैक लेने का कार्य सतत जारी है। जारी कैलेंडर वर्ष में अब तक 25 हजार से ज्यादा कॉल किए गए, इसमें से 97 प्रतिशत से ज्यादा ने सेवाओं को लेकर संतुष्ट जताई है। इन उपभोक्ताओं को मोबाइल नंबरों का चयन भी साफ्टवेयर से रेंडम आधार पर किया जाता है, इसी के आधार पर कॉल सेंटर 1912 की मदद से फोन लगाकर सेवाओं के प्रति उपभोक्ताओं को संतुष्टि या और सुधार के बारे में पूछा जाता है।बिजली कंपनी का कॉल सेंटर जहां से कस्टमर को फोन लगाकर फीडबैक लिया जा रहा है। मुख्य महाप्रबंधक ने बताया कि सबसे ज्यादा संतुष्टि पश्चिम क्षेत्र कंपनी के अधीन जिलों में ही है। यह 97-98 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि कॉल सेंटर में फीडबैक के लिए दैनिक आधार पर डेटा तैयार किया जाता है। जो उपभोक्ता कुछ मांग या शिकायत करते हैं। उनका यथासंभव निराकरण समय पर कर दिया जाता है। मुख्य महाप्रबंधक चौहान ने बताया कि कॉल सेंटर की दैनिक समीक्षा कंपनी स्तर पर प्रभावी रूप से की जाती है।

आईएमए इंटरनेशनल कॉन्क्लेव में ज्ञान-वत्सल स्वामी बोले

छोटा व्यक्ति भी दे सकता है बड़ा आइडिया

इंदौर (नप्र)। खुद की और कंपनी की सफलता के लिए 5बी फॉर्मूला अपनाएं। पहला बोल्ड एंड ब्रेव एक्शन, दूसरा ब्रिलियंट एक्शन, तीसरा ब्यूटीफुल एक्शन, चौथा बेनीफिशियरी एक्शन और पांचवां बेन बल एक्शन। यह तुम्हारे खुद की जिंदगी और ऑर्गेनाइजेशन को नई दिशा देगी। भगवान ने सभी को बुद्धि दी है लेकिन किसी के पास कम या ज्यादा दी है, व्यवस्था कम या ज्यादा हो सकती है। पढ़ने या बिजनेस करने की सुविधाएं और व्यवस्था भी कम या ज्यादा हो सकती हैं। बुद्धि से इंसान सोच सकता है। कई बार लोग हैसियत में छोटे लगते हैं, लेकिन ऐसे लोगों के दिमाग में आइडिया होता है।झ यह बात लाइफ कोच ज्ञान वत्सल स्वामी ने मीडिया से चर्चा में कही।

शुक्रवार को वे इंदौर में आयोजित आईएमए का इंटरनेशनल कॉन्क्लेव में भाग लेने आए थे। उन्होंने कहा कि कंपनी में छोटे व्यक्ति को भी महत्व दें। उसके पास से भी एक विचार मिल सकता है जो ऑर्गेनाइजेशन को ग्रो कर सकता है। लीडरशिप के लिए लोगों को पहचानना जरूरी है। उनका ध्यान रखें वे आपके काम का ध्यान रखेंगे।

ज्ञान वत्सल स्वामी ने बताया चुनौतियों का महत्व

भारत में रहना और काम करना भाग्य की बात है। उज्वल भविष्य की बात है। सिर्फ उद्योगों में ही नहीं हर क्षेत्र में चुनौतियां हैं, उससे घबराना नहीं है। चैलेंज नहीं है तो जीने का आनंद नहीं है। चैलेंज हैं तो व्यक्ति की पर्सनेलिटी डेवलप होती है। चैलेंज से कैरेक्टर डेवलप होता है। भविष्य उज्ज्वल रहता है। चैलेंज नहीं है तो आप कम भाग्यशाली हैं। चैलेंज नहीं है तो अभी जीवन में सही गोथ्र और राह मिलना बाकी है। एक लीडर को हर चीज की जानकारी होना चाहिए सपने देखना पर्याप्त नहीं सपनों को हकीकत में बदलने के लिए लगन जरूरी है।

साहसिक कदम और स्पष्ट दृष्टि से ही सफलता मिलती है। करियर, परिवार और आध्यात्मिकता का संतुलन ही स्थायी सुख का आधार है। छोटी-छोटी बातों में महारत हासिल करना सफलता के लिए आवश्यक है। अपने व्यवसाय और अपने लोगों को अच्छी तरह जानें। अपने लोगों का ध्यान रखें, वे आपके काम का ध्यान रखेंगे। ये लोग हमेशा आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता में होने चाहिए। एक लीडर को हर चीज की जानकारी होनी चाहिए, खासकर अपने लोगों की। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहानुभूति मजबूत संबंध बनाते हैं।

सफलता के लिए 5बी फॉर्मूला जरूरी

केवल कर्म नहीं, सद्कर्म आवश्यक

आध्यात्मिक गुरु डॉ. स्वामी महेश योगी ने कहा कि अगली पीढ़ी को पुरुषार्थ का महत्व समझना आवश्यक है। व्यक्तिगत विकास उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उद्योगों का विस्तार है। अपने बच्चों में संस्कार और श्रेष्ठ विचारों का संचार करें। भारत शक्ति ही नहीं बल्कि ज्ञान में भी अग्रणी है। संगठित प्रयास ही सशक्त भारत के निर्माण की नींव है। सफलता के लिए केवल कर्म नहीं, सद्कर्म आवश्यक हैं। भारत के ऋषियों की पहचान केवल भगवा से नहीं, बल्कि उनके ज्ञान और कर्म से होती है। आप सभी भारत के ऋषि हैं। भारत केवल एक राष्ट्र नहीं, बल्कि अपनी गहरी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ी एक जीवंत पहचान है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर इंदौर में कुश्ती महाकुंभ

8 देशों की चैंपियन महिला पहलवान दिखाएंगी दम, अहिल्याबाई के नाम से होगा टूर्नामेंट

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पहली बार अंतरराष्ट्रीय स्तर की महिला कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन होने जा रहा है। यह आयोजन 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर किया जाएगा। दलाल बाग परिसर में होने वाली इस प्रतियोगिता में भारत समेत 8 देशों की दिग्गज महिला पहलवान हिस्सा लेंगी। टूर्नामेंट का नाम अहिल्याबाई होल्कर अंतरराष्ट्रीय महिला कुश्ती रखा गया है। इसमें अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, मैक्सिको, मंगोलिया, दक्षिण अफ्रीका और नेपाल की शीर्ष पहलवान शामिल होंगी। सभी पहलवानों ने अपने देश के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीते हैं। 'देव से महादेव' वेलफेयर सोसायटी की ओर से आयोजित यह टूर्नामेंट दर्शकों के लिए पूरी तरह निःशुल्क रहेगा। पूर्व विधायक आकाश विजयवर्गीय के मार्गदर्शन में हो रहे इस आयोजन में भारत की ओलंपिक पदक विजेता महिला पहलवानों को भी आमंत्रित किया गया है। प्रतियोगिता शनिवार दोपहर 4 बजे से एयरपोर्ट रोड पर किला मैदान चौराहा स्थित दलाल बाग परिसर में शुरू होगी। अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित एवं भारतीय महिला रेलवे कुश्ती टीम के कोच कृपाशंकर पटेल पहलवान, भाजपा खेल प्रकोष्ठ के नगर संयोजक मानसिंह यादव, भाजपा आईटी सेल के सह संयोजक श्रेय प्रजापति, भाजपा के पूर्व जिला महामंत्री संतोष यादव एवं समाजसेवी पवन तिलवे ने बताया कि इन सभी देशों की पहलवानों से संपर्क कर उनकी सहमति प्राप्त हो चुकी है। आयोजन की दिव्यता को देखते हुए संचालन समिति का गठन भी किया गया है, जिसमें संजय बांकड़ा, कुलभूषण मित्तल कुक्की, अशोक चौहान चांदू, सन्नी तिवारी एवं प्रेम विजयवर्गीय शामिल किए गए हैं। इस अवसर पर वर्ष 2016 रियो ओलंपिक में भारत के लिए पदक विजेता साक्षी मलिक, अमरावती की पूर्व सांसद नवनीत राणा एवं अन्य खेल प्रेमी हस्तियों को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। दलाल बाग मैदान पर होने वाले इस दंगल की विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार भी दिए जाएंगे। मैदान पर इस कुश्ती के लिए विशेष प्रबंध भी किए जाएंगे। विदेशों से आने वाली महिला पहलवानों के स्वागत-सत्कार, उनके आवास एवं अन्य व्यवस्थाओं के लिए विभिन्न समितियों का गठन भी किया जा रहा है। यह पहला मौका है जब अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के प्रसंग पर महिलाओं की शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता के विकास के उद्देश्य से यह अंतरराष्ट्रीय आयोजन इंदौर में होगा। संभवतः देश में भी अब तक इतने देशों की महिला पहलवानों की कुश्ती का आयोजन पहले नहीं हुआ है।

महिला को बेहोश कर जेवरात उड़ाए

स्प्रे और क्रीम लगाकर दिया वारदात को अंजाम, जांच में जुटी पुलिस

इंदौर (नप्र)। इंदौर के विजय नगर थाना क्षेत्र में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक युवती ने एक महिला को स्प्रे और क्रीम लगाकर बेहोश किया और महिला के जेवरात लेकर भाग निकली। घटना की शिकायत पर पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। विजय नगर पुलिस के मुताबिक घटना शुक्रवार की है। सोलंकी नगर में रहने वाली 26 साल की लक्ष्मी पाल की शिकायत पर अज्ञात युवती के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। शुक्रवार को युवती महिला के घर पहुंची और उससे पानी मांगा। महिला पानी लेकर आई और युवती को दिया। युवती ने पानी पीने के दौरान अपने पास से स्प्रे निकाला और महिला के चेहरे पर स्प्रे कर दिया जिससे महिला बेहोश हो गई। इसके बाद उसने कोई क्रीम निकाली और वह भी उसके चेहरे पर लगा दी। जिससे महिला पूरी तरह बेहोश हो गई। महिला के बेहोश होने पर युवती ने महिला के कान से सोने के टॉप्स, गले का मंगलसूत्र उड़ा लिया और भाग निकली। महिला के होश में आने पर घटना की जानकारी सामने आई। जिसके बाद महिला विजय नगर थाने पहुंची और मामले की शिकायत की। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त अमरेंद्र सिंह ने बताया कि महिला की शिकायत पर विजय नगर थाने में केस दर्ज कर लिया गया है।

मप्र चिकित्सक महासंघ का आंदोलन स्थगित

इंदौर (नप्र)। शासकीय चिकित्सक महासंघ, मध्य प्रदेश ने चिकित्सकों के मुद्दों को लेकर चल रहे आंदोलन को आगामी सूचना तक स्थगित कर दिया है। यह निर्णय महासंघ के पदाधिकारियों और प्रमुख सचिव संदीप यादव तथा आयुक्त स्वास्थ्य तरुण राठी के बीच हुई बैठक के बाद लिया गया। इंदौर में मेडिकल टीचर्स और जूडा ने भी इसके मद्देनजर आंदोलन स्थगित कर दिया है और काम करेंगे। अब 7 मार्च को एक बैठक होगी। इसके बाद आगे की स्थिति स्पष्ट होगी। एमटीए के सचिव डॉ. अशोक ठाकुर ने आंदोलन स्थगन की पुष्टि की है। दरअसल भोपाल में हुई बैठक में चिकित्सकों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई और उनके समाधान के लिए समय सीमा तय की गई। डॉ. राकेश मालवीय महासंघ के संयोजक ने बताया सभी पदाधिकारियों ने एकमत से आंदोलन को स्थगित करने का निर्णय लिया है।

एडवोकेट एक्टः वकीलों ने हड़ताल कर किया प्रदर्शन

इंदौर (नप्र)। केंद्र सरकार ने अधिवक्ता अधिनियम 1961 में संशोधन का प्रस्ताव जारी किया है। इसके तहत वकीलों के हड़ताल करने पर रोक लगाने का प्रस्ताव भी रखा गया है। शुक्रवार को इसी प्रस्ताव के खिलाफ वकीलों ने हड़ताल कर दी थी। सुबह 10 बजे के करीब वकील जिला एवं सत्र न्यायालय में अपने-अपने प्रकरणों की पैरवी के लिए पहुंचे। साढ़े 10 बजे अभिभाषक संघ का संदेश मिला कि प्रस्तावित संशोधनों के खिलाफ हड़ताल कर दी गई है। प्रकरणों में पैरवी करने के लिए वकील कोर्ट रूम में नहीं जाएं। वकीलों का कहना है, केंद्र सरकार ने विदेशी फर्मों में काम कर रहे वकीलों के भी भारत आकर पैरवी करने की बात संशोधित एक्ट में कही है। वहीं बार काउंसिल में भी भारत सरकार के तीन प्रतिनिधियों को भेजे जाने का प्रस्ताव रखा है। खास बात यह है कि वकील कई सालों से एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट की मांग कर रहे हैं। दर्जनों बार हड़ताल कर रहे हैं। उन्हें अधिकार देने के बजाय उनका हड़ताल करने का अधिकार भी समाप्त किए जाने का प्रस्ताव रख दिया है। 28 फरवरी तक वकीलों से इस संशोधन पर सुझाव और दावे-आपत्तियां मांगी गई हैं।

संशोधन में धारा 35 ए के मायने

संशोधन में एक नई धारा 35 ए पेश की गई है। इसके तहत अधिवक्ताओं का कोई भी संघ या संघ का कोई भी सदस्य या कोई भी अधिवक्ता, व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से, अदालतों के काम का बहिष्कार या विरत रहने का आह्वान नहीं करेगा।

ओंकारेश्वर डैम के टरबाइन ने रोका नर्मदा पर ब्रिज निर्माण

कलेक्टर बोले- रबी सीजन में पावर सप्लाई ज्यादा, आगे 5-5 दिन का ब्रेक लेंगे

खंडवा (नप्र)। ओंकारेश्वर बांध से बिजली का उत्पादन होने से लगातार टरबाइन से पानी छोड़ा जाता है, इससे नर्मदा में पानी का फ्लो तेज रहता है। यह नर्मदा नदी के भीतर कंस्ट्रक्शन वर्क के लिए चुनौती बन गया हैं। पानी पर रोक लगाने का एकमात्र उपाय टरबाइन बंद करना है। मुसीबत यह है कि इस दौरान बिजली उत्पादन ठप रहेगा। दरअसल, नर्मदा नदी पर खंडवा के मोरटक्का गांव में इंदौर-ऐदलाबाद नेशनल हाईवे का ओवरब्रिज बन रहा है। इसी के अलावा थोड़ी दूरी पर इंदौर-अकोला रेल लाइन ब्रिज का निर्माण भी हो रहा है। वहीं ओंकारेश्वर में अभय घाट से ओंकार पर्वत के रास्ते ब्रिज बनाया जा रहा है। यह तीनों प्रोजेक्ट रेल, सड़क और धार्मिक टूरिज्म के लिए खास हैं।

खास बात यह है कि नेशनल हाईवे का ब्रिज सिर्फ पानी के बहाव वाले हिस्से में अधूरा रह गया हैं। बता दें कि, ओंकारेश्वर बांध परियोजना के पावर स्टेशन से 3 यूनिट से बिजली उत्पादन होता है। एक यूनिट से प्रति सेकेंड 223 क्यूबिक मीटर पानी छोड़ा जाता है।

कलेक्टर बोले– जल्द ही 5–5 दिन का ब्रेक लेंगे

खंडवा कलेक्टर ऋषव गुप्ता का कहना है कि, इस समय बिजली की अधिक जरूरत रहती हैं। किसानों के लिए, मोटर पंप चलाने के लिए। ऐसी स्थिति में टरबाइन रोकना हमारे ओवरऑल एनर्जी प्रोडक्शन मिक्स के लिए सही नहीं रहता। अभी यह तय किया गया है कि जब रबी सीजन खत्म हो जाएगा, जो अब बहुत जल्द होने वाला है। उसके बाद थोड़ा पावर डिमांड भी देश का कम होगा। तब यह प्लान किया गया है कि 5-5 दिन के ब्रेक लिए जाएंगे। इसी दौरान जो पिल्लर्स है, वह खड़े किए जाएंगे।

ब्रिज बनने के बाद उत्तर से दक्षिण के खुलेंगे गेट

इंदौर से ऐदलाबाद (महाराष्ट्र) तक बन रहा नेशनल हाईवे देश के दो हिस्सों को जोड़ रहा है। हाईवे बनने के बाद उत्तर से दक्षिण की सीधी कनेक्टिविटी हो जाएगी। इंदौर से हैदराबाद सीधे जुड़ेगा। व्यापार और उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। उज्जैन महाकाल मंदिर और खंडवा ओंकारेश्वर मंदिर में पर्यटकों की संख्या बढ़ जाएगी। 2028 के उज्जैन सिंहस्थ से पहले यह हाईवे बनकर तैयार हो जाएगा। दो से ढाई घंटे में इंदौर से खंडवा पहुंच सकेंगे। वाहन दुर्घटनाएं भी कम होंगी। प्रतिदिन 20 हजार से ज्यादा वाहन चालकों को राहत।

एमपी का दूसरा सबसे लंबा नेशनल हाईवे ब्रिज होगा

मोरटक्का में नर्मदा नदी पर बनने वाला यह ब्रिज प्रदेश का दूसरा सबसे लंबा नेशनल हाईवे ब्रिज होगा। इस हाई लेवल ब्रिज की लंबाई 1275 मीटर यानी करीब सवा किलोमीटर है। ब्रिज की कुल लागत 146 करोड़ रुपए है। कुल 60 पिलर पर 60 स्पॉन से तैयार होना है। ब्रिज के पिलर की नदी में 28-29 मीटर और किनारों पर 12 से 15 मीटर जमीन से ऊंचाई रहेगी। ब्रिज के अप और डाउन ट्रैक पर सड़क की चौड़ाई 16-16 यानी कुल 32 मीटर रहेगी। यह नेशनल हाईवे अलग-अलग 6 पैकेज में बन रहा है। कुल 215 किलोमीटर लंबे हाईवे की लागत 5427 करोड़ रुपए है। इसके निर्माण की शुरुआत इंदौर से खंडवा के बीच 4 पैकेज में हो चुकी है।

जयंती पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद के प्रणेता थे स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद ऐसे देशभक्त, समाज सुधारक, मार्गदशक और आधुनिक भारत के महान चिंतक थे, जिन्होंने न केवल ब्रिटिश सत्ता से जमकर लोहा लिया बल्कि अपने कार्यों से समाज को नई दिशा और ऊर्जा भी प्रदान की। 1857 की क्रांति में उनका अमूल्य योगदान था। स्वामी दयानंद का बचपन बहुत अच्छा बीता लेकिन उनके जीवन में घटी एक घटना ने उन्हें इस कदर प्रभावित किया कि वे 21 वर्ष की आयु में ही अपना घर बार छोड़कर आत्मिक एवं धार्मिक सत्य की तलाश में निकल पड़े और एक सन्यासी बन गए। जीवन में ज्ञान की तलाश में वे स्वामी विरजानंद से मिले, जिन्हें अपना गुरु मानकर उन्होंने मथुरा में वैदिक तथा योग शास्त्रों के साथ ज्ञान की प्राप्ति की। 1845 से 1869 तक कुल 25 वर्षों की अपनी वैराग्य यात्रा में उन्होंने कई प्रकार के दैविक क्रियाकलापों के बीच विभिन्न प्रकार के योगों का भी गहन अभ्यास किया।

आर्य समाज के संस्थापक के रूप में वंदनीय महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के टंकारा में 12 फरवरी 1824 को हुआ था लेकिन हिन्दू पंचांग के अनुसार उनकी जयंती प्रतिवर्ष फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष की दशमी को मनाई जाती है, जो इस वर्ष 23 फरवरी को है। ऐसे में हिंदू कैलेंडर के अनुसार स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती 23 फरवरी को मनाई जा रही है। स्वामी दयानंद ऐसे देशभक्त, समाज सुधारक, मार्गदशक और आधुनिक भारत के महान चिंतक थे, जिन्होंने न केवल ब्रिटिश सत्ता से जमकर लोहा लिया बल्कि अपने कार्यों से समाज को नई दिशा और ऊर्जा भी प्रदान की। 1857 की क्रांति में उनका अमूल्य योगदान था। स्वामी दयानंद का बचपन बहुत अच्छा बीता लेकिन उनके जीवन में घटी एक घटना ने उन्हें इस कदर प्रभावित किया कि वे 21 वर्ष की आयु में ही अपना घर बार छोड़कर आत्मिक एवं धार्मिक सत्य की तलाश में निकल पड़े और एक सन्यासी बन गए। जीवन में ज्ञान की तलाश में वे स्वामी विरजानंद से मिले, जिन्हें अपना गुरु मानकर उन्होंने मथुरा में वैदिक तथा योग शास्त्रों के साथ ज्ञान की प्राप्ति की। 1845 से 1869 तक कुल 25 वर्षों की अपनी वैराग्य यात्रा में उन्होंने कई प्रकार के दैविक क्रियाकलापों के बीच विभिन्न प्रकार के योगों का भी गहन अभ्यास किया।

देश के स्वतंत्रता संग्राम में स्वामी दयानंद की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी और 'स्वराज' का नारा उन्होंने ही दिया था, जिसे बाद में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने अपनाया और 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा दिया। वेदों का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ उनकी महत्ता लोगों तक पहुंचाने तथा समझाने के लिए उन्होंने देशभर में भ्रमण किया। जीवनपर्यन्त वेदों, उपनिषदों का पाठ करने वाले स्वामी जी ने पूरी दुनिया को इस ज्ञान से लाभान्वित किया। उनकी किताब 'सत्यार्थ प्रकाश' आज भी दुनियाभर में अनेक लोगों के लिए मार्गदर्शक साबित हो रही है। वेदों को सर्वोच्च मानने वाले स्वामी दयानन्द ने वेदों का प्रमाण देते हुए हिन्दू समाज में फैली कुरीतियों और अंधविश्वासों का डटकर विरोध किया। जातिवाद, बाल विवाह, सती प्रथा जैसी समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने में उनका योगदान उल्लेखनीय है, इसीलिए उन्हें 'सन्यासी योद्धा' भी कहा जाता है। दलित उद्धार तथा स्त्रियों की शिक्षा के लिए भी उन्होंने कई आन्दोलन किए। हिन्दू धर्म के अलावा इस्लाम तथा ईसाई धर्म में फैली बुराईयों और अंधविश्वासों का भी उन्होंने जोरदार खंडन किया। उन्होंने अपना पूरा जीवन मानव कल्याण, धार्मिक कुरीतियों की रोकथाम तथा वैश्विक एकता के प्रति समर्पित कर दिया। वे आध्यात्मिक क्रांति के संदेशवाहक थे।

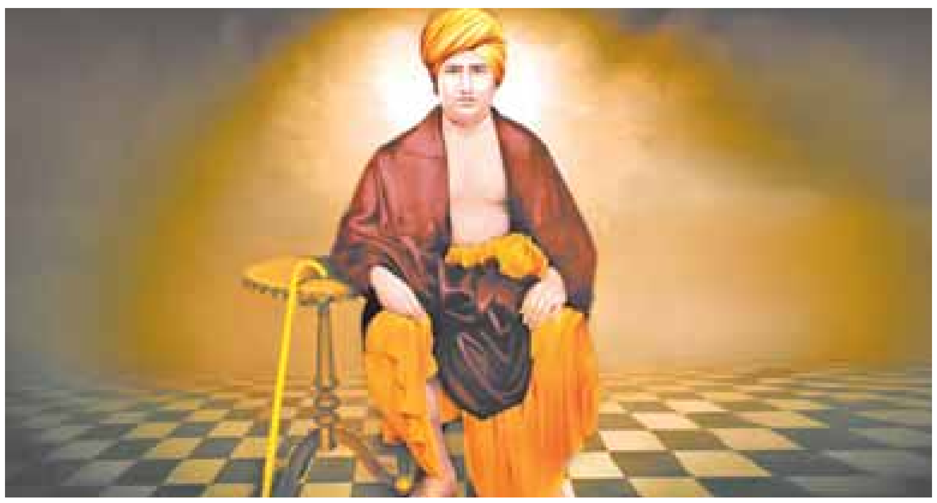

स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना मुम्बई के गिरगांव में गुड़ी पड़वा के दिन 10 अप्रैल 1875 को की थी, जिसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के साथ समूचे विश्व को एक साथ जोड़ना था। आर्य समाज के द्वारा उन्होंने दस मूल्य सिद्धांतों पर चलने की सलाह दी। मूर्ति पूजा के अलावा वे जाति विवाह, महिलाओं के प्रति असमानता की भावना, मांस के सेवन, पशुओं की बलि देने, मंदिरों में चढ़ावा देने इत्यादि के सख्त खिलाफ थे और इसके लिए उन्होंने लोगों में जागरुकता पैदा करने के अथक प्रयास किए। अपने 59 वर्ष के जीवनकाल में महर्षि दयानंद ने न सिर्फ देश में व्याप्त बुराईयों के खिलाफ लोगों को जागृत किया बल्कि अपने वैदिक ज्ञान से नवीन प्रकाश को भी देशभर में फैलाया। हालांकि कई लोगों ने उनका जमकर विरोध भी किया लेकिन स्वामी दयानंद सरस्वती के तार्किक ज्ञान के समक्ष बड़े-बड़े विद्वानों और पंडितों को भी नतमस्तक होना पड़ा। वे अपने जीवन को पुनर्जन्म, ब्रह्मचर्य, सन्यास तथा कर्म सिद्धांत के चार स्तंभों पर खड़ा मानते थे।

स्वामी दयानंद हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक थे और उनका मत था कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक पूरे देश में एक ही भाषा 'हिन्दी' बोली जानी चाहिए। मानव शरीर को नश्वर बताते हुए वह कहते थे कि हमें इस शरीर के जरिये केवल एक अवसर मिला है, स्वयं को साबित करने का कि 'मनुष्यता' और 'आत्मविवेक' क्या है। वे कहा करते थे कि शक्ति किसी अलौकिकता या चमत्कारिता के प्रदर्शन के लिए नहीं होती। सभी धर्मों और उनके अनुयायियों को वे एक ही ध्वज तले बैठा देखना चाहते थे। दरअसल उनका मानना था कि आपसी लड़ाई का फायदा सदैव तीसरा उठाता हैं, इसलिए इस भेद को दूर करना आवश्यक है। कर्म करने को लेकर स्वामी जी तर्क देते थे कि काम करने से पहले सोचना बुद्धिमानी, काम करते हुए सोचना सतर्कता और काम करने के बाद सोचना मूर्खता है। वह कहा करते थे कि दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए और तब आपके पास सर्वश्रेष्ठ लौटकर आएगा। उनका कहना था कि अज्ञानी होना गलत नहीं है लेकिन अज्ञानी बने रहना गलत है।

स्मृति लेख

निगाहों से चलो

कमलेश कुमार दीवान

फिर कहीं दूर चलो अपनी राहों से चलो
देखो अपने को और अपनी निगाहों से चलो।

मंजिलें यह तो इशारा नहीं करती है कभी
घुप अंधेरे से चलो हाय और आहों से चलो।

अब बहुत दूर उजाले हैं तो डर भी उनका
तुम तो बादल हो हवाओं की पनाहों से चलो।

खो गया है जो उसे कहां खोज रहे हो ÷दीवान÷
छोड़ो उनको तुम अभी अपने निबाहों से चलो।

लघुकथा

ख्वाहिश

लालबहादुर श्रीवास्तव

अभावों और ग़रीबी से जूझता जिंदगी भर मांगू नाम का एक भिखमंगा मरने के बाद जब स्वर्ग को पहुंचा तो उससे कहा गया मांगू तुम क्या मांगना चाहते हो?

मांगू चौंका !आज कोई पहली बार उसे कुछ देने को कह रहा था।

किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो गया मांगू बिल्कुल गूंगा।

आसपास खड़े देवदूत मांगू को कुहनी मारकर फुसफुसाये - अरे !मूरख ,चुप क्यों हैं? ईश्वर स्वयं तुझसे कह रहे हैं मांग ले जो चाहे मांगना?

मांगू ने आश्चर्य भरे अविश्वास से कहा क्या मैं जो कुछ भी मांगूगा ,यह दें सकेंगे?

अरे हां,हां।अरे यह सर्वशक्तिमान है।दूत बोला।

बहुत झिझकते हुए मांगू बोला-तो मुझे एक गर्म गर्म पूरी रोटी दे दो।

सामान्य कहानियों का विशेष संग्रह

समीक्षा

जवाहर चौधरी

समीक्षक

आजादी के बाद से साहित्य की हर विधा में एक बड़ा परिवर्तन आया है। शिक्षा के प्रचार प्रसार और तकनीकी विकास ने हमें बहुत दिशाएं दी हैं। साहित्य समाज का दर्पण है, समाज में अगर बदलाव हुए, विकास हुआ है तो वह साहित्य में भी दिखेगा। हर बदलाव कुछ नए दरवाजे खोलता है तो पिछले दरवाजों पर प्रश्न चिन्ह भी लगता है। समय के साथ पीढ़ियां भी बदल जाती है और उनका दृष्टिकोण भी। पचास साल पहले जो साहित्य पाठक पर असर डालता था उसका प्रभाव अब कम हो गया है। समाज गतिशील है और समय निरंतर बदल रहा है। साहित्य भी लगातार सूक्ष्म से सूक्ष्मतर हो रहे हमारे जीवन अनुभव को व्यक्त कर रहा है। ऐसे मैं लेखकों के सामने एक चुनौती है समय के साथ चाल बनाए रखने की। मेरे सामने सुनील सक्सेना का नया कहानी संग्रह 'तुम कैसी हो' है।

सुनील सक्सेना अनेक विधाओं में लिखने वाले लेखक हैं। कहानियों के अलावा व्यंग्य और लघु कथाओं में भी उनका योगदान है। उनके पास सीधी सरल भाषा है और अपने समय को देखने की सरल दृष्टि भी। पच्चीस कहानियों के इस संग्रह में वे अपने आसपास के अनेक विषयों पर नजर डालते हैं और अपनी बात कह देते हैं। पुस्तक बताती है कि सुनील सक्सेना का ध्यान विशेष रूप से परिवार और उसकी समस्याओं को लेकर है। कुछ कहानियां व्यक्ति केंद्रित भी है। शीर्षक कहानी 'तुम कैसी हो' में परिवार के बीच खट रही स्त्री की दिनचर्या का मार्मिक प्रसंग है। पति तब समझ पाता है जब पत्नी बीमार हो जाती है। 'अपराध बोध' एक ऐसी कहानी है जिसमें एक समाजसेवी संस्था के आग्रह वाले फोन को फ्रॉड समझ कर फटकारते हुए रद्द करने की घटना है। बाद में बेटे के एक्सीडेंट के बाद ब्लड की जरूरत पड़ती है तो वही संस्था काम आती है। 'एक अंतहीन यात्रा' करोना काल से जुड़ी कहानी है। दूसरे शहर में पड़ा मजदूर परिवार इस स्थिति का शिकार है और वापस अपने गांव पहुंचाना चाहता है। कहानी उसके संघर्ष की कथा कहती है। 'इंतजार एक मौत का' कहानी अस्वाभाविक सी लगती है। आलोक बाबू ने अपनी बेटे की शादी तय की है। लेकिन उनकी पत्नी शारदा अचानक बीमार हो जाती है और बिस्तर पकड़ लेती है। बीमारी के हालात बने रहते हैं तो लड़की वाले शादी का अपना प्रस्ताव वापस ले लेते हैं। कारण यह कि उनकी इकलौती बेटी ऐसी जगह कैसे खटती रह सकती है जहाँ एक बीमार लंबे समय तक खटिया पकड़े हुए हो। इधर शारदा की हालत दिन पर दिन बिगड़ती जाती है लेकिन मृत्यु नहीं होती है। परिस्थितियों के कारण आलोक उनकी मृत्यु का इंतजार करते दिखाए गए हैं। नई बहू, ससुराल और सास यह पारिवारिक विषय पत्रिकाओं में काफी देखने को मिलते हैं। सुनील सक्सेना की एक कहानी 'जमाना खराब है' में सास की निगाह बहू के जेवरों पर है। जेवर संभाल के रखने के लिए वह बहू को समझती है की यात्रा में ज़ेवर नहीं ले जाना जमाना खराब है। कोई चुरा सकता है। बहू अपने जेवर भरा सूटकेस अपनी सास को ही दे कर जाती है। पुरानी कहावत है चोर के हाथ में चाबी हो तो सुरक्षा बढ़ जाती है।

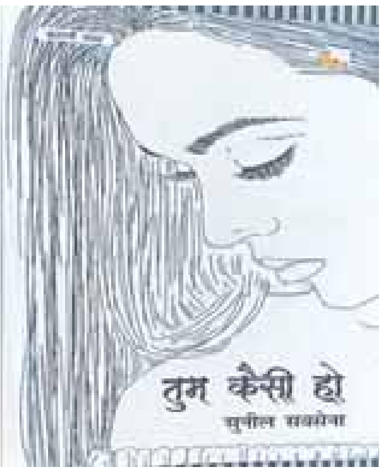

भागते दौड़ते इस जीवन में अब युवाओं के पास समय कहां है। फिर उनकी अपनी इच्छाएं हैं अपने प्रोग्राम हैं। इस जीवन शैली में बुजुर्ग कहां फिट बैठते हैं। सुनील की कहानी 'बुजुर्गों का साया' इस विसंगत दृश्य को खूब चित्रित करती है। कहानी का लब-ओ-लुआब इन पंक्तियों में है -- कोई हर्ज नहीं बेटा। हम तीन दिन में सब निपटा देंगे। अब तुम यूं समझो बेटा की आज के समय की डिमांड को देखते हुए हम लोगों के पास भी इन कर्मकांडों का काम्बो प्लान है। जिसमें उठावना बरसी सारे कार्यक्रम हम तीसरे दिन ही सलटा देते हैं। इस प्लान में समय भी कम और खर्चा भी कम। पंडित जी ने कहा।

आठ सिक्के संग्रह की छोटी और मार्मिक कहानी है। कड़कड़ाती ठंड में नदी के तलहटी से सिक्के बटोरने वाला बालक अपने पेट के लिए संघर्ष कर रहा है। लेकिन सिक्के फेकने वालों के मन में संवेदना और चिंता अपने बच्चों के लिए है । डांस बार और एक दरवाजा खुला रखना कुछ अलग कहानियाँ हैं। सुनील सक्सेना की ये कहानियाँ वर्णनात्मक और विवरणात्मक है। प्रायः हर कहानी उद्देश्यपूर्ण और सुखान्तक हैं। कहानियों के पात्र पाठक के मन में ठहरते भी हैं। यहां कहा जा सकता है कि सुनील का यह सामान्य कहानियों का विशेष संग्रह है। उम्मीद की जा सकती है कि पाठक इसे पसंद करेंगे।

पुस्तक -- तुम कैसी हो (कहानी संग्रह)
लेखक-- सुनील सक्सेना
प्रकाशित -- न्यू वर्ल्ड पब्लिकेश
मूल्य -- 225 रु.

कविता

खाली होना

सुधीर कुमार सोनी

एक पेड़ खड़ा है
वह पत्तों से खाली है
पत्तों के बिना खाली पेड़,
अच्छे नहीं लगते।

निठ्ठला आदमी,घर के लोगों को
और बाहर के लोगों को भी,खटकता है
आदमी का खाली होना,
अच्छा नहीं लगता ।

अच्छे नहीं लगते
खाली झोपड़ी
खाली मकान
खाली ईमारतें ।

गहराती रात में,
सड़कें खाली हो जाती हैं
लगता है,जैसे थककर रुक गयी हो ।

खाली नदियाँ
खाली तालाब
खाली कुएँ
सभी ,अपनी अपनी कहानी कहने को आतुर हैं
जिसे हम मनुष्यों ने, कभी नहीं सुना ।

अपने अंतिम स्टेशन में पहुँचकर
रेलगाड़ी खाली हो जाती है ।

खाली होना
भरा होने का क्रम,चलता रहता है ।

लेकिन जेब का खाली होना
लम्बे समय तक खाली होना
आदमी को लगता है,
उसकी दुनिया खाली हो गयीं है
पैर उठते नहीं कहीं निकलने को
शरीर भारी हो जाता है ।

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

स्वर्गवासी

रामा तीर्थराज से सटे हुए एक छोटे से गाँव में खेतिहर मज़दूर था। उनकी कोई संतान नहीं थी। उम्र यही कोई साठ के क़रीब होगी। पिछले दिनों गाँव में भगवत कथा का आयोजन हुआ। अनपढ़ रामा ने पंडित जी से पूछा- 'महाराज ! यह पाप-पुण्य और मोक्ष क्या होत है और कुंभ में नहान से पाप कैसे धुल जात हैज और इस जगत से आवागमन से मुक्ति कैसे मिल जात है?'

पंडित जी अपना आधा-अधूरा ज्ञान बघारते हुए बड़े गर्व से बोले- 'देखो रामाज वो बात ऐसी है कि जीवन में लोगों को लोभ-लालच और माया-मोह के मकड़जाल में फँसकर बहुत सारे पापकर्म करने पड़ते हैं। उनसे मुक्ति पाने के लिए हमारे धर्म में हर बारह साल में कुंभ का आयोजन होता है, पर इस बार महाकुंभ एक सौ चवालीस साल बाद आया है। जो भी धार्मिक त्रिवेणी में स्नान करता है उसके सकल पाप धुल जाते हैज उसे जीते-जी पुण्य कीज और मरने के बाद सीधे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।' हम लोग सपरिवार महाकुंभ स्नान को जा रहे हैं। क्या तुम भी जाना चाहोगे? कथितधर्म धारणा से अनभिज्ञ रामा ने पंडित जी की बात पर भरोसा कर हामी भर दी। पंडित जी ने रामा और उसकी पत्नी का ट्रेन से टिकिट कटवा दिया। दोनों नियत दिनांक, नियत समय पर खाने-पीने का समान और दो-चार कपड़े-लत्तों की पोटली बांधकर स्टेशन पहुँच गए, पर होनी को कुछ और ही मंज़ूर था। स्टेशन पर लोगों की अपार भीड़ देखकर उनका सिर चकरा गया और अभागे उलटे पैर वापस घर लौट आए। उधर पंडित जी अपनी कार से तीर्थराज की यात्रा पर निकल गए। महीने भर बीत गया, पर पंडित जी और उनके परिवार का कोई सदस्य लौटकर वापस नहीं आया। एक सुबह के समय रामा यूँ ही घूमते हुए उनके घर के सामने से गुजर रहा था। पंडित जी घर के दरवाज़े पर ताला लटका देखकर सहसा उसके पाँव ठिठक गए। पड़ोसी से पूछने पर उसे पता चला कि प्रयाग से कुछ किलोमीटर की दूरी पर उनकी कार सड़क किनारे खड़े एक ट्रक से भिड़ गई और सपरिवार स्वर्गवासी हो गए हैं।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए
उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर
एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास
रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा
कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने,
इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं।
इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सामयिक

सुसंस्कृति परिहार

लेखक स्तंभकार हैं।

निराला: वसंत का लाड़ला कवि

वसंत का आना हो और निराला की जी की याद ना आए ऐसा मुमकिन नहीं । निराला और लाड़ला वसंत एक दूसरे के बिन अधूरे से लगते हैं ।वे सूर्य कांत त्रिपाठी के साथ निराला भी हैं ना इसलिए वे अन्य कवियों से इतर भी देखने की सामर्थ्य रखते हैं वे खुशनुमा धरती में उन सूखी डालों पर भी नज़र रखते हैं जिनको भी वसंत की दरकार है । आइए कुछ वासंती रचनाओं में उन्हें देखते हैं -- कैसे प्रफुल्लित मन से वे वसंत के आगमन की सूचना सबसे पहले सखि को देते हैं -

सखि वसन्त आया
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया
किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका,
मधुप-वृन्द बन्दी
पिक-स्वर नभ सरसाया

वे पहली सूचना उसे ही देते हैं जो सुकोमल मन और संवेदनशील मनोभावों को पहले-पहल जान और पहचान लेती है तथा जिस पर प्रकृति का सीधा प्रभाव पड़ता है ।वे भी पंत की तरह सुकुमार नज़र आते हैं वसंत के सम्मोहन में सतत कैद होते जाते हैं । वसंत अपने पूरे रंग वैभव के साथ उनके गीतों में नज़र आता है। वसंत में धरती पग पग रंग जाती है; वृक्षों के अंतस की लालिमा निखर जाती है। वसंत की सुषमा को वे अपनी इस रचना में पूर्ण लालित्य के साथ उकेरते हैं

रँग गई पग-पग धन्य धरा
हुई जग जगमग मनोहरा।
वर्ण गंध धर, मधु-मरन्द भर

तरु उर की अरुणिमा तरुणतर
खुली रूप कलियों में पर भर
स्तर-स्तर सुपरिसरा।
गूँज उठा पिक-पावन पंचम
खग-कुल-कलरव मृदुल मनोरम,
सुख के भय काँपती प्रणय-क्लम
वन श्री चारुतरा।

उनकी पैनी दृष्टि से वह रूखी शुष्क डाल भी नहीं छुप पाती वह उससे भी संवाद करते हैं उसे वसंत का संदेश सुनाते हुए आश्वस्त करते हैं-

रुखी री यह डाल वसन वासन्ती लेगी.
देख खड़ी करती तप अपलक
हीरक-सी समीर माला जप
शैल-सुता अपर्ण - अशना
पल्लव -वसना बनेगी
वसन वासन्ती लेगी
हार गले पहना फूलों का
ऋतुपति सकल सुकृत-कूलों का
स्नेह, सरस भर देगा उर-सर
स्मर हर को वरेगी
वसन वासन्ती लेगी

कूकती कोयल की मधुरिम गूज वसंत के आगमन की उद्घोषणा मादकता का संचार कुंज कुंज में करती है ।

कुंज -कुंज कोयल बोली है,
स्वर की मादकता घोली है

चहुंओर रंगों की रंगीनियां उन्हें अपनी ओर खींचती हैं वे लिखते हैं समूची धरती पर जैसे वसंत ने अपनी कूची से अनेक रंग भर दिए हों। देखें-यह रंगीन नज़ारा

÷कूची तुम्हारी फिरी कानन में
फूलों के आनन आनन में
फूटे रंग वासंती, गुलाबी,
लाल पलास, लिए सुख, स्वाबी,
नील, श्वेत शतदल सर के जल,
चमके हैं केशर पंचानन में।

हालांकि निराला जीवन भर अभावों के बीच रहे मगर जीवन में बीते कुछ वासंती मधुर क्षणों को भूल नहीं पाए। कवि के जीवन में वसन्त का माधर्य लेकर पहले तो उनकी सहचरी मनोहरा देवी आई, बाद में लाडली बिटिया सरोज वसंतस्वरूपा आई। कवि की ये स्मृतियाँ सरोज-स्मृति कविता में इस प्रकार

देखा मैंने, वह मूर्ति धीति/
मेरे वसंत की प्रथम गीति-
श्रृंगार, रहा जो निराकार,
रस कविता में उच्छ्वसित धार
गाया स्वर्गीय प्रिया-संग-
भरता प्राणों में राग ङ्क रंग,
रति रूप प्राप्त कर रहा वही,
आकाश बदलकर बना मही।

सचमुच निराला ने वसंत को जितना शिद्दत से आत्मसात कर उसके विभिन्न स्वरुपों को अपनी अनेक कविताओं में पिरोया वह अद्भुत है लगता है प्रकृति के अलौकिक वसंत के सम्मोहन ने ही उनसे कई रचनाएं लिखवाईं ।महाप्राण निराला का जन्म भी वसंत पंचमी के दिन हुआ ।जन्म से अंत तक इसीलिए वसंत उनके साथ रहा वे इसलिए यह कह पाते हैं--

अभी न होगा मेरा अन्त
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसन्त
अभी न होगा मेरा अन्त

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

पद्मश्री श्याम बिहारी के कृतियों में जन जीवन की झलक

गाड़ी करीब घंटे भर विलंब से पंहुच रही थी। स्टेशन पर पहले से ही, कला पर रचनाओं की एक से बढ़कर एक पुस्तकें देने वाले प्रबुद्ध कला समीक्षक राकेश गोस्वामी जी इंतजार कर रहे थे जबकि उनकी तबियत इसकी इजाज़त नहीं दे रही थी, कोई और होता तो आराम को तवज्जो देता पर गोस्वामी जी का प्यार उनके बड़प्पन को दिखाता है। उन्हीं के सौजन्य से कलागुरु से मिलना संभव हो सका था। ऐसी अवस्था में लगातार काम करना, कम्प्यूटर पर भी लगातार बने रहना कलाकार डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल के दैनिक चर्या में शामिल है। लेखन, चित्र निर्मिती लगातार जारी है। निरंतर तल्लीन होकर रचना कर्म में लगे रहने का परिणाम यह है कि उनके पास से हमेशा कुछ न कुछ नया जरूर प्राप्त हो जाता है। मुलाकात बहुत ही छोटी रही जिसमें सबकुछ समेट पाना मुश्किल था फिर भी बहुत कुछ हासिल हो गया।

अभी हाल ही में पद्म पुरस्कारों की घोषणा हुई है जिसमें देश के अलग-अलग क्षेत्रों से विशिष्ट सृजन हेतु कई लोगों के नाम की घोषणा हुई है, सभी विशिष्ट जनों को इस उपलब्धि हेतु बहुत-बहुत बधाई। उन्हीं नामों में से एक डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल जी को कला के क्षेत्र में पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया है। डॉ. अग्रवाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आज चर्चा करने का विचार है तो आइए और साथ चलिए इस विशेष कला यात्रा पर आपका स्वागत है।

उम्र के ऐसे पड़ाव पर जब कि आराम की दरकार होती है, कुछ नया कर पाना थोड़ा मुश्किल होता है, कहीं भी निकल पाना, किसी कार्यक्रम में शिरकत कर पाना और भी मुश्किल हो जाता है पर ऐसी अवस्था में भी कलाकार, कला गुरु डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल की सक्रियता देखकर नतमस्तक हो जाने को जी चाहता है। आज भी घंटों अपने स्टूडियो में रंगों रेखाओं के साथ मगन रहने वाले श्याम बिहारी जी कला के किसी भी विषय पर बड़े ही सहज अंदाज में समझाते हैं और हंसते हुए अपने सृजनशीलता पर चर्चा भी करते हैं। बारीक बिल्कुल बारीक रेखाओं के साथ ही कला पर बारीक-बारीक बातों पर ध्यान देते हुए कई पुस्तकें और आलेख भी आपने लिखा है वहीं बड़े-बड़े स्ट्रोक्स भी हैं आपके कृतियों और जीवन में भी। मिलनसार व्यक्तित्व, बिल्कुल बच्चों सा हंसता-खिलखिलाता चेहरा, संत स्वभाव अग्रवाल जी हमेशा कला के क्षेत्र में कुछ न कुछ करने की सोच ही रहे होते हैं। रूप शिल्प संस्थान के माध्यम से भी आप निरंतर, कला में आने वाले नये एवं पुराने लोगों के लिए अच्छा कार्य कर रहे हैं। प्रयागराज में आधुनिक कला दीर्घा खोलने का भी आपका विचार है।

गाड़ी करीब घंटे भर विलंब से पंहुच रही थी। स्टेशन पर पहले से ही, कला पर रचनाओं की एक से बढ़कर एक पुस्तकें देने वाले प्रबुद्ध कला समीक्षक राकेश गोस्वामी जी इंतजार कर रहे थे जबकि उनकी तबियत इसकी इजाज़त नहीं दे रही थी, कोई और होता तो आराम को तवज्जो देता पर गोस्वामी जी का प्यार उनके बड़प्पन को दिखाता है। उन्हीं के सौजन्य से कलागुरु से मिलना संभव हो सका था। ऐसी अवस्था में लगातार काम करना, कम्प्यूटर पर भी लगातार बने रहना कलाकार डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल के दैनिक चर्या में शामिल है। लेखन, चित्र निर्मिती लगातार जारी है। निरंतर तल्लीन होकर रचना कर्म में लगे रहने का परिणाम यह है कि उनके पास से हमेशा कुछ न कुछ नया जरूर प्राप्त हो जाता है। मुलाकात बहुत ही छोटी रही जिसमें सबकुछ समेट पाना मुश्किल था फिर भी बहुत कुछ हासिल हो गया। बंगाल स्कूल से कला में भारतीयता को लेकर जो वीणा उठाया गया था, कृतियों में सहजता, सौम्यता, शालीनता को लेकर अवनींद्रनाथ टैगोर से क्षितींद्र नाथ मजूमदार तक की जो यात्रा रही है, विषय में भारतीयता की जो सुगंध रही है, रेखा और रंग की कोमलता और मोहित कर लेने वाली जो शक्ति रही है, जिस पद्धति को हम वाश पद्धति के नाम से जानते हैं ऐसी पद्धति जो अब धीरे-धीरे जैसे कहीं खोती सी जा रही है, निराश भी करती है पर इन सभी के बीच खुश हो लेने वाली जो बात है वो सरल, सहज, शालीन स्वभाव वाले कलाकार क्षितींद्र नाथ मजूमदार के परम शिष्य डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल के कृतियों को देखने से है जहाँ ग्रामीण परिवेश अपने सादगी के साथ है, जहाँ हर लुप्त होती वस्तुओं को कृतियों में बचा लेने की कुव्वत है, जहाँ प्रेम है, विरह है, मेघदूत से संदेशा पहुँचाने का प्रकरण है, शकुंतला जैसे पात्रों का अंकन है तो सुखी परिवार, गुरू-शिष्य परंपरा भी है, जहाँ संस्कार है तो प्राचीन शैलियों पर आधारित छात्रों के अध्ययन हेतु कलाकृतियाँ भी हैं। दीपक जलता रहा रात भर, आराम करते मजदूर, मेले से वापसी, गपशप सभी कृतियाँ जल रंग (वाश पद्धति) में हैं और सभी में भारत की संस्कृति, अपनापन, जीवंतता बनी हुई है। कोमल रंग, लोचदार एवं लंबी-लंबी आकृतियाँ इनकी पहचान बन गई है।

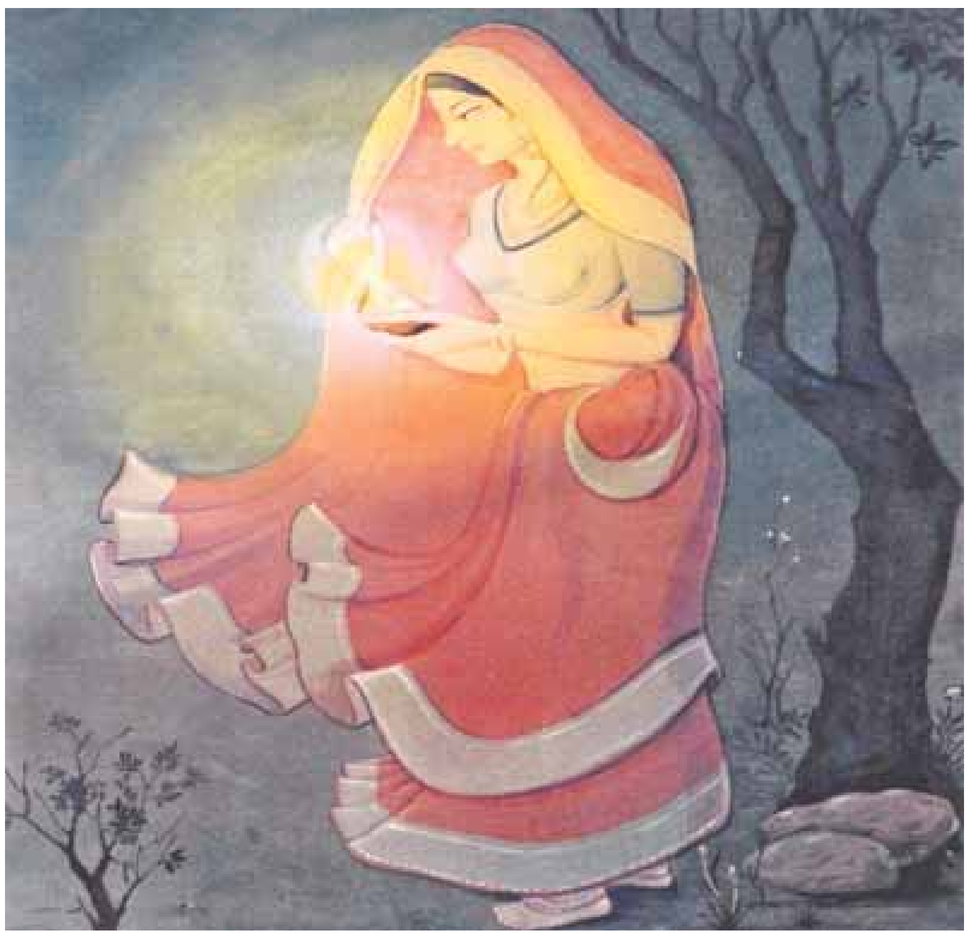

कृति ‘सरस्वती’ में देवी सरस्वती को इतने सहज अंदाज में उकेरा गया है कि देखते ही बनता है। अधखुले नैन, सौम्य मुस्कान, पुष्प का कुंडल, वीणा बजाती लंबी उंगलियाँ, जल में खिले कमल के बीच बारीक रेखाओं का अंकन वाश पद्धति की विशेषता बखूबी प्रदर्शित है। वाश पद्धति जहाँ कृति को बार-बार धुल कर विशेष प्रभाव उत्पन्न करने की बात होती है, पर कलाकार की सिद्धहस्तता जग जाहिर है। ‘कार्यरत लोहार’ में ग्रामीण परिवेश, क्रियात्मक भाव भंगिमा आदि मजबूती के साथ है पर कुछ है जो थोड़ा सा खटकता है वहीं दूसरे कृति ‘सोहर’ में ढोल-मंजीरे के थाप के साथ गूंजते गीत की अनुभूति हो रही है, श्रोता रूपी कुछ मानव आकृतियाँ और होने चाहिए थे खैर ये तो अपने विचार हैं। उनकी कृतियाँ संबंधों पर भी बात करतीं हैं। गुरु-शिष्य (टेंपरा) इसी को परिभाषित करती है। कृति में प्राचीन शिक्षा पद्धति श्याम-स्वेत चित्र, जो वर्णनात्मक शैली में हैं, को गजब के ताजगी के साथ दिखाया गया है। मुख, भाव-भंगिमा आदि का आपसी सामंजस्य जबरदस्त है। मेघदूत पर आधारित आपकी कई कृतियाँ है, एक कृति जिसमें संभवतः शकुंतला है, अंकन इतना बेजोड़ हुआ है कि सभी कृतियों पर भारी है। लहरदार वस्त्र, केश, बादल, हाथ में लहरदार पुष्प, श्याम-श्वेत रंगों का सधा संयोजन आपके सौंदर्य दृष्टि की परिचायक है। जल रंग, तैल रंग, मिक्स मीडिया, मूर्ति जैसे कई माध्यमों में आपकी सक्रियता देखते बनती है। आधुनिक कलाकृतियों पर भी आपने काम किया है।

मजूमदार जी के कहने पर आप गवर्नमेंट कालेज ऑफ़ आर्ट एंड क्राफ्ट कलकत्ता से शिक्षा के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में लेक्चरर के पद पर ज्वाइन किए जहाँ कला को लेकर निरंतर गतिविधियाँ होती रहीं। प्रयाग संगीत समिति तथा इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ जैसे संस्थानों से भी आपका जुड़ाव रहा।

राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ से जुड़ाव, अकादमी से प्रकाशित ‘कला त्रैमासिक’ का सम्पादन

सहित मजूमदार के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर पुस्तक लिखने के साथ ही अनेक कला कार्यशालाओ एवं प्रदर्शनियों का सफल संचालन भी आपके नाम है। विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ अन्य जगहों पर आपकी प्रदर्शनी, वक्तव्य, प्रदर्शन का भी वर्णन है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कला समीक्षा के साथ ही आपकी तमाम पुस्तकें प्रकाशित हैं। कलाकार डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल जी का जन्म 01 सितंबर 1942 को सिरसा, प्रयागराज में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था, इनके पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री कृष्ण जी रहे। बचपन से ही कलाकार बनने के गुण आपमें नजर आने लगे थे जो प्रयाग से प्रकाशित अखबारों के पन्नों पर पूरे प्रयाग वासियों को दिखने लगे थे। कार्टून, रेखाचित्र, अभिनय सहित जो भी विशेषताएं आपको अपने अंदर दिखीं आप सभी पर काम किए पर उसमें से चित्रकला को ज्यादा तवज्जो मिला और चित्रकला ने आपको तवज्जो देते हुए पद्मश्री तक के सफर तक पहुंचा दिया भविष्य में और की भी उम्मीद है। कलाकार बनने हेतु आपको भी पारिवारिक जद्दोजहद का सामना करना पड़ा था पर ख्वाब के प्राप्ति हेतु ख्वाबों के ख्वाब पर चलकर आप आज यहाँ हैं।

अग्रवाल जी लगातार कला संबंधी आलेख लिखते रहे जिसका प्रकाशन समकालीन कला, रूप शिल्प, कला त्रैमासिक, सुंदरम, कलादीर्घा सहित अन्य पत्र पत्रिकाओं में होता रहा है। श्रद्धा, प्रतीक्षा, उन्मादनी, लहर एवं चांद, श्याम तेरी मुरली ना बजाऊं, विरहणी, मौन संगीत आदि आपकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। डॉक्टर अग्रवाल जी कागज की जगह कैनवास पर एक्रेलिक रंगों से वॉश पेंटिंग का प्रभाव उत्पन्न करने का भी साहस किए हैं। उनके चित्रों की प्रदर्शनी इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, कोलकाता के महाजातीय सदन, इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट, राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ आदि जगहों पर हुई हैं। आपको 1965 में कोलकाता की वार्षिक प्रदर्शनी में श्रेष्ठ भारतीय चित्र का इंदुरचित अवार्ड भी प्राप्त हुआ है। 2019 में राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ का कला गौरव सम्मान भी प्राप्त हुआ है।

आयोजन रपट

❒ **आशीष दशोत्तर**

निश्छल मन पर लिखी इबारतों को पढ़ने का एक जतन

वहां यादों की एक अविरल धारा जैसे ही प्रवाहित हुई , समय की रेत पर उभरे हुए पदचिन्ह याद आने लगे। कांधे पर रखा हुआ विश्वास का हाथ और सर पर स्नेह का आशीष महसूस होने लगा। क़दम से क़दम मिलाते हुए प्रेरक पाथेय कण नज़र आते रहे। हाथों को क़लम थमा कर सार्थक पंक्तियां लिखने की सीख याद आई। निश्छल मन पर कुछ नई इबारतें लिखने का एक जतन और हुआ ।

अवसर था साठवें दशक से गत वर्ष तक निरंतर सृजनरत वरिष्ठ भाषाविद, साहित्यकार डॉ. जयकुमार ‘जलज’ की प्रथम पुण्यतिथि पर आयोजित भावांजलि कार्यक्रम का। इस आयोजन में जलज जी की सिर्फ़ यादें ही नहीं थीं बल्कि वह पूरा समय उभर कर सामने आ रहा था जिसे जलज जी ने स्वयं जिया। अपनों के साथ बांटा और जिसे यादगार बनाया । जलज जी के जीवन से जुड़ी हुई महत्वपूर्ण स्मृतियां वक्ताओं के शब्दों से बार-बार उभरती रहीं ।

कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद हुआ

समारोह में वरिष्ठ कवि प्रो. रतन चौहान ने जलज जी की कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद सुना कर भाव विभोर कर दिया । उन्होंने कहा कि कविताओं के अंग्रेज़ी अनुवाद को शीघ्र ही पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाएगा । जलज जी के साथ बिताए हुए पलों का मार्मिक वर्णन वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मुरलीधर चांदनीवाला, यूसुफ़ जावेदी , इतिहासविद् नरेंद्र सिंह पवार , मुनींद्र दुबे , सुभाष जैन , डॉ. पदम घाटे, संस्था के जिला संयोजक नरेन्द्रसिंह डोडिया , जलज जी की बेटियों श्रद्धा घाटे , स्मिता हुम्बड़ राजेश शर्मा, धीरेन्द्रसिंह राठौर,ओमप्रकाश त्रिवेदी, महावीर वर्मा, दीपेन्द्रसिंह भैंसाडाबर,विनोद झालानी, आशीष जैन, गजेन्द्रसिंह चौहान, डॉ. प्रवीणा दवेसर, रश्मि पंडित, डॉ. खुश्बू जांगलवा ने जलज जी का स्मरण किया।

गीतों ने गरिमा बढाई

जलज जी द्वारा साठ - सत्तर के दशकों से गत वर्ष तक रचे गए गीतों को शहर के गायकों ने अपनी आवाज़ से सजाया। अनुनाद संस्था के कलाकारों ने अजीत जैन के निर्देशन में प्रभावी प्रस्तुति दी। गीतों की प्रस्तुति की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई जिसे अवनि उपाध्याय ने प्रस्तुत किया। इसके पश्चात गुरु को वन्दन की प्रस्तुति हेमन्त जोशी ने दी। तत्पश्चात एक जतन और - संजय परसाई ‘सरल’, निराला के प्रति - राजेंद्र शर्मा, ऐसा नियम ना बांधो - संजय चौधरी, गाओ मन , बात केवल एक -श्रीमती शोभा शेर, एक पक्षी की तरह- आशीष दशोत्तर, कहानी सहज है - रिदम मिश्रा, हर द्वार तुम्हारा द्वार - नरेन्द्र त्रिवेदी, बहुलता - रतन कोल्हे,मनोज जोशी, जयंत उपाध्याय,कुलदीप शर्मा, नरेंद्र सिंह शेखावत, सुनीता नागदे ने प्रस्तुत किए। सभी कलाकारों का सम्मान भी किया गया।

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

नेटफ्लिक्स पर ‘धूमधाम’ मनोरंजन के स्तर पर विफल

वर्ष 2019 में लेखक और निर्देशक के रुप में फिल्म -卐 उरी- द सर्जिकल स्ट्राइक 卐 से अपनी शुरुआत करने वाले आदित्य धर ने फिल्म- ‘ आर्टिकल 370 ’ से निर्माता के तौर पर भी अपनी पहचान को पुख्ता किया था । इस बार उन्होंने देशभक्ति से लबरेज या संवेदनशील विषय के बजाय अपनी फिल्म के लिए रोमाण्टिक कॉमेडी जॉनर को चुना । रोमाण्टिक कॉमेडी फिल्म धूम धाम से उन्होंने लेखक और निर्माता की भूमिका को दोहराया है, लेकिन परदे पर वह कुछ खास रचने से इस बार चूक गए । कहानी और पटकथा - ‘ जब वी मेट ’ सहित कई पॉपुलर फिल्मों के फॉर्मूले को दोहराती है ।

चौदह फरवरी - वेलैंटाइंस डे पर नेटफ्लिक्स पर रिलीज़ हुई इस साल की पहली फिल्म - ‘ धूमधाम ’ का टीजर, ट्रेलर और पोस्टर देखकर यही लगा था कि ये फिल्म वैलेंटाइंस डे पर प्रेम कहानी का एक हल्के-फुल्के और विशुद्ध मनोरंजन का अहसास करवायेगी ।प्रेम में रहस्य- रोमांच का तड़का लगायेगी और यामी गौतम व प्रतीक गांधी की जोड़ी दर्शकों का जमकर मनोरंजन भी करेगी। लेकिन, ऐसा कुछ होता दिख नहीं रहा। कई बार तो लगता है कि नेटफ्लिक्स वालों ने ये सवा गुना, डेढ़ गुना और दो गुना स्पीड से फिल्म को खत्म करने का जरिया धूम धाम जैसी फिल्मों के लिए ही विकसित किया होगा। आपकी फिल्म खत्म हो गई। उनको व्यूज मिल गए। और, नेटफ्लिक्स में कोई तो होगा, जो ऐसी फिल्मों पर दर्शकों के 499 रुपये महीने खर्च कराकर अपना ‘प्रोफाइल’ मजबूत कर रहा होगा ।

वर्ष 2019 में लेखक और निर्देशक के रुप में फिल्म -‘ उरी- द सर्जिकल स्ट्राइक’ से अपनी शुरुआत करने वाले आदित्य धर ने फिल्म- ‘ आर्टिकल 370 ’ से निर्माता के तौर पर भी अपनी पहचान को पुख्ता किया था । इस बार उन्होंने देशभक्ति से लबरेज या संवेदनशील विषय के बजाय अपनी फिल्म के लिए रोमाण्टिक कॉमेडी जॉनर को चुना । रोमाण्टिक कॉमेडी फिल्म धूम धाम से उन्होंने लेखक और निर्माता की भूमिका को दोहराया है, लेकिन परदे पर वह कुछ खास रचने से इस बार चूक गए । कहानी और पटकथा - ‘जब वी मेट ’ सहित कई पॉपुलर फिल्मों के फॉर्मूले को दोहराती है ।

फिल्म की कहानी कोयल (यामी गौतम)और वीर (प्रतीक गाँधी)की है । जिनकी दो हफ़्तों की मुलाकात के बाद अरेंज मैरिज हो रही है। पेशे से जानवरों के डॉक्टर वीर को लगता है कि उसकी पत्नी कोयल एकदम भोली भाली- सी है क्योंकि उसके सास ससुर ने कोयल की यही छवि उसके सामने बनायी है। दोनों की शादी भी हो जाती है और सुहागरात को अचानक से उनके फाइव स्टार होटल के कमरे में दस्तक होती है और दो गुण्डे टाइप आदमी किसी चार्ली को ढूँढते हुए वहाँ आते हैं ।किसी तरह से वीर, कोयल के साथ वहाँ से बचकर भागता है,लेकिन इस दौरान उसे मालूम पड़ता है कि जिस कोयल को वह भोली भाली समझ रहा है , वह कोयल कार चलाने में माहिर होने के साथ -साथ गुण्डों के छक्के छुड़ाने में भी आगे है । कोयल का यह वर्जन देख वीर का रिएक्शन क्या होगा.चार्ली कौन है और वह किससे जुड़ा हुआ है। आखिर क्यों गुण्डे वीर और कोयल का पीछा कर रहे हैं । इन सब सवालों के जवाब फिल्म आगे देती तो है मगर वो जवाब दर्शकों को तसलीदायक नहीं लगते है ।

वर्ष 2019 में लेखक और निर्देशक के तौर फिल्म- ‘ उरी - द सर्जिकल स्ट्राइक ’ से अपनी शुरुआत करने वाले आदित्य धर ने फिल्म आर्टिकल 370 से निर्माता के तौर पर भी अपनी पहचान को पुख्ता किया था.इस बार उन्होंने देशभक्ति से लबरेज या संवेदनशील विषय के बजाय अपनी फिल्म के लिए रोमाण्टिक कॉमेडी जॉनर को चुना।रोमाण्टिक कॉमेडी फिल्म धूम धाम से उन्होंने लेखक और निर्माता की भूमिका को दोहराया है, लेकिन परदे पर वह कुछ खास रचने से इस बार चूक गए हैं । कहानी और स्क्रीनप्ले जब वी मेट सहित कई पॉपुलर फिल्मों के फॉर्मूले को दोहराती हैं ।

फिल्म के सह लेखक और निर्माता आदित्य धर ने इंटरव्यू के दौरान यह बात बताई थी कि उन्होंने इस फिल्म की कहानी 2014 में लिखी थी । फिल्म देखते हुए आपको इसकी कहानी और स्क्रीनप्ले में कई फिल्मों की छाप साफ़ तौर पर नजर आती है.कुछ भी नया नहीं परोसती है. फिल्म में फेमिनिज्म का तड़का भी लगाया गया है लेकिन वह भी फिल्म में कुछ खास जोड़ नहीं पायी है । फिल्म का एक मोनोलॉग मुम्बई के परिवेश के लिए थोड़ा अनफिट भी लगता है क्योंकि कहानी मुम्बई पर बेस्ड हो गयी है हालांकि जब आदित्य ने कहानी लिखी थी तो दिल्ली कहानी का आधार था। दो अलग अलग लोग हैं, जिनके बीच कुछ भी एक जैसा नहीं है,लेकिन उनका अलग होना ही उन्हें एक दूसरे के लिए और खास बना जाता है । ये पहलू भी अब तक कई फिल्मों में नजर आ चुका है। कुल मिलाकर यह रोमाण्टिक कॉमेडी फिल्म टुकड़ों में एंटरटेन करती हैं लेकिन पूरी फिल्म एंटरटेनमेंट का पैकेज साबित नहीं होती है । यही कमजोरी फिल्म के संवाद में भी रह गयी है । किसी कॉमेडी फिल्म की सबसे बड़ी जरुरत संवाद होते हैं । फिल्म की लम्बाई एक घंटे 48 मिनट की है और यह एक रात की ही कहानी है तो फिल्म सीधे ही मूल कहानी पर आ जाती ह ।.यह इस फिल्म के अच्छे पहलुओं में से एक है. फिल्म का गीत संगीत भी प्रभावित नहीं करता है.

अभिनय की बात करें तो यामी गौतम धर और प्रतीक गाँधी अपने अभिनय से इस फिल्म की कहानी और स्क्रीनप्ले को मजबूती देते हैं।यामी गौतम धर ने इस तरह का किरदार पहले कभी नहीं किया है। वह अपनी भूमिका के साथ पूरी तरह से न्याय करती हैं ।प्रतीक गाँधी भी अपने सहज अभिनय से फिल्म को एंगेजिंग बनाते हैं ।प्रतीक बब्बर छोटी सी भूमिका में असरदार रहे हैं.बाकी के किरदार ठीक ठाक रहे हैं।

दिव्यांग बच्चों की चित्रकारी व गीत-कविता की प्रस्तुति

देवास। शहर की सामाजिक संस्था एक्ट ईव फाउंडेशन ने आज अपनी टीम के साथ कुछ समय दिव्याग बच्चों के बीच बिताया और उनके साथ भोजन करके उन्हें उनकी जरूरत के उपहार भेंट कर उन्हें खुशी बाँटने की एक पहल की । बच्चों ने इस अवसर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए किसी ने सुन्दर चित्रकारी तो किसी ने गीत कविता प्रस्तुत की ।

एक्ट ईव फाउंडेशन अध्यक्ष मोहन वर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में अतिथि रूप में नवागत डीपीसी अजय मिश्रा थे । मिश्रा ने इस अवसर पर कहा कि दिव्याग बच्चों के बीच आकर और इन्हें खुशी पहुंचाने के लिए आयोजित इस कार्यक्रम का हिस्सा बनकर मुझे दिल से खुशी है । प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस वर्ग के बच्चों को जो दिव्याग नाम दिया है वो इनकी खास विशेषता जाहिर करता जैसे दिव्य अस्त्र की पहचान उसके दिव्य विशेषण से होती है । समाज के ऐसे बच्चों को खुशी देने की एक्ट ईव फाउंडेशन की यह पहल सराहनीय है ।

जिला दिव्याग बालक छात्रावास के पचास से अधिक बच्चों के बीच इस कार्यक्रम में प्रतिभाशाली बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया । मुंबई के समाजसेवी श्री वसंत उचिल की दिवंगत बिटिया की पुण्यतिथि पर हुए इस कार्यक्रम में हॉस्टल प्रभारी सुरेंद्र खिंची,श्रीमती राजेश्वरी, पाटीदारजी,एक्ट ईव फाउंडेशन के किशोर असनानी,मनीषा असनानी, ईसाक शेख,शकुंतला मालवीय,पत्रकार राहुल परमार हर्ष असनानी,सुनील आयचित,श्रीमती गुलाब वर्मा उपस्थित थे ।

सर्किट हाउस में अब आम का पूरी तरह प्रवेश बंद..

मुख्य द्वार पर लगा दिया ताला..

नर्मदापुरम। कलेक्टर का सर्किट हाउस दौरा के बाद वहां की व्यवस्था में परिवर्तन दिखाई दिया, उनके दौरे के बाद सर्किट हाउस के गेट पर ताला लगा दिया यहां अब बगैर अनुमति के प्रवेश वर्जित है, सर्किट हाउस क्या बाहरी तत्वों की चारागाह थी.? बगैर अनुमति जिसमें न केवल रुककर बल्कि सर्किट हाउस का लुफ्त उठाया जा रहा था। बहरहाल जो हो रहा था वह ठीक नहीं था क्योंकि कलेक्टर के दौरे के बाद यहां लोकनिर्माण विभाग ने दस सीसीटीवी कैमरे लगा दिए, सभी का बगैर अनुमति प्रवेश बंद हो गया भले ही वह मीडिया से संबंधित क्यों नहीं हो। तीन कर्मचारी निकाल दिए गए एक वेतन वृद्धि तत्काल प्रभाव से रोक दी गई, विभागीय ई को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया, विभागीय एसडीओ फिर एडीएम, एसडीएम तक को कलेक्टर ने फटकार लगाई.. आखिर वजह क्या रही कि मैडम ने सर्किट हाउस का अचानक दौरा करके सर्किट हाउस की पूरी व्यवस्था खंगाल डाली। पहली बार मुख्य द्वार पर ताला लगा कर पूरी तरह आवाजाही प्रतिबंधित कर दिखाई निश्चित ही कलेक्टर ने अपने दौरे में कुछ अजूबा पाया होगा तभी तो कहा जा रहा है चिर-परिचित मीडिया कर्मी को वहां देखकर उन्होंने बिल्कुल अजनबी अंदाज में मीडिया कर्मी से पूछा आप कौन.. यहां कैसे..? किसी कार्यक्रम की रुपरेखा बनाने के लिए संपादक से मिलने गए मीडिया कर्मी ने शायद उन्हें बताया जो दो नंबर कमरे में रात रुके थे। उसका आमंत्रण उन्हें भी दिया जायेगा कहा गया। कलेक्टर ने यहां स्वल्पाहार किया और सर्किट हाउस की दशा बदल डाली। शायद समय की मांग हो या कुछ अलग रहस्य इसे लेकर सर्किट हाउस में गत दस बारह दिन से वीरानी है दिनभर जहां कुछ न कुछ होचपोच हुआ करती थी।

एअर इंडिया फ्लाइट की टूटी सीट पर बैठे शिवराज

कहा- क्या यात्रियों की मजबूरी का ऐसे फायदा उठाएंगे,अगर पैसे लेते हैं तो सुविधा भी दें

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को एअर इंडिया के विमान की टूटी सीट पर बैठकर यात्रा करनी पड़ी। उन्होंने एअरलाइंस की सुविधाओं पर सवाल उठाए हैं। शिवराज भोपाल से दिल्ली जा रहे थे। शिवराज की प्रतिक्रिया सामने आने के बाद केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ने मामले की जांच के साथ ही एयर इंडिया को जरूरी कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शिवराज ने लंबा पोस्ट लिखा- शिवराज बोले- अगर पैसे लेते हैं तो सुविधा भी दें। इस घटना के बाद कुरूक्षेत्र स्थित गुरुकुल पहुंचे केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने एयर इंडिया के प्लेन की फटी सीट को लेकर कहा कि अगर कोई चीज गलत होती है उसके लिए चुप होना या कुछ बोलना 2 रास्ते है। इससे लोगों को तकलीफ होती है। यह चीज मैनेजमेंट को पता होनी चाहिए। अगर पैसे लेते हैं तो सुविधा भी दें।

विमानन मंत्री ने मामले की जांच के दिए निर्देश-शिवराज सिंह की शिकायत के बाद केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) को मामले की जांच करने और तुरंत सुधारात्मक उपाय सुझाने के निर्देश दिए हैं।

केंद्रीय मंत्री चंद्रशेखर की टाटा ग्रुप से दखल की मांग- एयर इंडिया की फ्लाइट में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को 'टूटी हुई सीट' मिलने पर केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने विमानन कंपनी की सेवा पर चिंता जाहिर कर टाटा ग्रुप से दखल देने की मांग की है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि कंपनी यदि कार्रवाई करने में नाकाम होगी तो सरकार को दखल देना पड़ सकता है। केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहा कि शिवराज सिंह के अलावा कोई और व्यक्ति होता तो वह इस तरह की सर्विस पर अपनी कड़ी नाराजगी जाहिर करता।

बैतूल में शिवम् सेवा समिति ने निकाली विशाल कैंसर जागरूकता यात्रा

एक छोटा बदलाव, बड़ा प्रभाव, कैंसर के खतरे से बचने का दिया संदेश

बैतूल। प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग से होने वाले नुकसान को देखते हुए शिवम् सेवा समिति के तत्वावधान में शनिवार को दोपहर 2 बजे शहर में एक विशाल जागरूकता रैली निकाली गई। रैली के माध्यम से समिति के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने सभी प्रतिष्ठानों पर जाकर लोगों को गुलाब का फूल भेंट कर हाथ जोड़कर प्लास्टिक के गिलास, चम्मच, कटोरी, पन्नी और थर्माकोल के उपयोग को बंद करने की अपील की। इस जागरूकता रैली में समाजसेवी, डॉक्टर, पत्रकार, व्यापारी एवं गणमान्य नागरिक शामिल हुए। यह जागरूकता यात्रा लल्ली चौक से सीमेंट रोड, थाना चौक, बस स्टैंड, गंज, अंबेडकर चौक होते हुए वापस लल्ली चौक पहुंची, जहां यात्रा का समापन हुआ। समिति ने विशेष रूप से आग्रह किया कि सभी अपने घरों में शादी, जन्मदिन और अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में प्लास्टिक के चम्मच, गिलास, कटोरी के बजाय लकड़ी के चम्मच, कागज और पत्तों से बने दोने व गिलास का ही उपयोग करें।

शिवम सेवा समिति के सुनील शर्मा एवं राकेश रक्कू शर्मा ने बताया कि समिति ने मैरिज लॉन संचालकों से भी अपील की कि वे अपने परिसर में प्लास्टिक सामग्री का उपयोग पूरी तरह से बंद करें। इस अवसर पर यह अनुरोध किया गया कि सप्ताह में एक दिन मोबाइल उपवास रखें, ताकि सामाजिक सरोकार और पर्यावरण के प्रति जागरूकता को बल मिले। रैली में शामिल वक्ताओं ने प्लास्टिक से होने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्लास्टिक से बने चम्मच, गिलास और कटोरियों के उपयोग से कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए प्लास्टिक का त्याग कर वैकल्पिक और पर्यावरण हितैषी सामग्री का उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है।

शिवम् सेवा समिति ने वर्ष 2018 में भी प्लास्टिक निर्मित चाय के कप के उपयोग को बंद करने के लिए एक विशेष अभियान चलाया था, जो पूरी तरह से सफल रहा था। आज बैतूल में प्लास्टिक कप की जगह कागज के कप का उपयोग किया जा रहा है। समिति ने नागरिकों से आह्वान किया कि वे इस मुहिम में सहभागी बनें और बैतूल को प्लास्टिक मुक्त बनाने में अपना योगदान दें। एक छोटा बदलाव, भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में बड़ा कदम साबित हो सकता है। जागरूकता यात्रा में प्रमुख रूप से नवीन तातेड, प्रदीप खंडेलवाल, सुनील शर्मा, बबलू दुबे, हंसराज धुर्वे, दीपक मेहता, अनिल सिंह ठाकुर, बलवंत धोटे, सुनील द्विवेदी, संजय पप्पी शुक्ला, अतीत पवार, रक्कू शर्मा, बिट्टू बोथरा, धीरज हिरानी सहित सैकड़ों की संख्या में लोग इस जागरूकता अभियान में शामिल हुए।

साल 2016 में मिले थे दो गिद्ध, इसके बाद जिले में निरंक रही गिद्धों की संख्या

वन विभाग ने कराया तीन दिन सर्वे, नहीं मिला एक भी गिद्ध

संजय द्विवेदी

बैतूल। हाल ही में वन विभाग द्वारा करवाये गए सर्वे में हमारे जिले में एक भी गिद्ध नहीं मिला है। वन विभाग ने गत 17 से 19 फरवरी तक गिद्धों की गिनती के लिए सर्वे कराया था। जिसमें एक भी गिद्ध नहीं मिला। हालांकि 9 साल पहले यहां महज दो गिद्ध मिले थे। जिसके बाद यह डेटा निरंक पाया गया है। जिले के 16 वन परिक्षेत्रों में करीब 700 से अधिक वन कर्मियों ने गिद्धों की गणना की है। जिसमें किसी भी क्षेत्र में गिद्ध नहीं पाए गए हैं। दक्षिण वन मंडल के डीएफओ विज्यानंतम टीआर के मुताबिक वर्ष 2016 में जिले के उत्तर वन मंडल के सारणी इलाके में सिर्फ दो गिद्ध मिले थे। जिसके बाद यहां 9 साल में एक भी गिद्ध नहीं मिला है। जिसके पीछे प्रमुख कारण बैतूल जिले का वातावरण और यहां गिद्धों के लिए अनुकूल परिवेश न होना माना जा रहा है। दूसरी तरफ पर्यावरण विज्ञानी इसे कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग को भी कारण मान रहे हैं। दक्षिण वन मंडल के डीएफओ विजयानंतम टीआर ने बताया कि जिले में हर साल दो बार गिद्धों की गणना की जाती है। इस बार 17 से 19 फरवरी तक गणना हुई, जिसमें एक भी गिद्ध नहीं मिला है।

पहाड़ी क्षेत्र कम होना भी बड़ा कारण- बताया जाता है कि 2016 में हुए सर्वे के दौरान बैतूल जिले के उत्तर वन मंडल अंतर्गत दो इजिप्शियन वल्चर पाए गए थे। लेकिन अब यह भी विलुप्त हो चुके है। दक्षिण वन मंडल के डीएफओ विजयानंतम टीआर के मुताबिक इस इलाके में पहाड़ी क्षेत्र कम होने, घोंसले बनाने के लिए स्थानों की कमी होने, ब्रीडिंग की संभावनाओं के कम होने के कारण गिद्धों का न पाया जाना सामने आया है। उल्लेखनीय है कि वन विभाग ने 17, 18 और 19 फरवरी को गिद्ध की गणना की थी। वनकर्मियों ने अपने-अपने वन परिक्षेत्र के जंगलों में गिद्ध की तलाश की, लेकिन कहीं पर भी गिद्ध नहीं मिले। इससे साफ हो गया कि अब जिले में गिद्ध विलुप्त हो गए हैं।

यहां गौरतलब है कि भारत में मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा गिद्ध पाए जाते हैं। इस साल 2025 में प्रदेश स्तर पर की गई गिद्ध गणना में यहां 12,981 गिद्ध पाए गए थे।

गिद्धों के संरक्षण के लिए क्या किया जा सकता है

(1) गिद्धों के घोंसले की पहचान करके उनका संरक्षण करना चाहिए।

(2) गिद्धों के महत्व और उनकी घटती आबादी से होने वाले विपरीत परिणामों के बारे में लोगों को जागरूक करना चाहिए।

(3) गिद्धों पर्यावरण संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, गिद्ध जैसे पक्षी पर्यावरण के प्राकृतिक सफाई कर्मी होते हैं, जो मृत पशुओं को खाकर पर्यावरण को शुद्ध करते है।

इनका कहना है-

17 से 19 फरवरी 2025 तक तीन दिन गिद्धों की गणना के लिए जिले में सर्वे हुआ था, लेकिन एक भी गिद्ध नहीं मिला। अप्रैल में पुनः सर्वे कराया जायेगा। वैसे बैतूल जिले में 2016 में दो गिद्ध मिले थे। इसके बाद गिद्ध नहीं मिले। इस इलाके में पहाड़ी क्षेत्र कम और जंगल एरिया ज्यादा होने से भी गिद्ध नहीं आते है।

- **विजयानंतम टीआर**, डीएफओ,
दक्षिण वन मंडल बैतूल

बोर्ड पैटर्न पर आधारित कक्षा 5वी और 8वी की वार्षिक परीक्षा 24 फरवरी से

बैतूल। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के निर्देशानुसार बोर्ड पैटर्न पर आधारित कक्षा 5वी एवं 8वी की वार्षिक परीक्षा 24 फरवरी से 05 मार्च 2025 तक आयोजित की जाएगी। जिला शिक्षा केंद्र के जिला परियोजना समन्वयक ने बताया कि बैतूल जिले में परीक्षा संचालन के लिए 10 विकास खंडों के 79 जन शिक्षा केन्द्रों में 270 परीक्षा केन्द्रों पर कक्षा 5वी के 22 हजार 208 विद्यार्थी तथा कक्षा 8वी के 24 हजार 215 इस प्रकार कुल 46 हजार 423 छात्र परीक्षा में सम्मिलित होगें। वार्षिक परीक्षा संचालन हेतु समस्त व्यवस्थाएं कर ली गई है। परीक्षा संचालन के लिए सभी 270 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा केन्द्राध्यक्ष एवं सहायक केन्द्राध्यक्षों की नियुक्ति जिला शिक्षा अधिकारी बैतूल द्वारा कर दी गई है। सभी परीक्षा केन्द्रों पर आवश्यक व्यवस्थाएं यथा पेयजल, शौचालय, बैठक व्यवस्था करने हेतु बीआरसीसी, केन्द्राध्यक्ष एवं जन शिक्षा केन्द्र प्रभारियों को निर्देशित किया गया है। परीक्षा की गोपनीय सामग्री का वितरण जिला स्तर से विकास खंडों के माध्यम से जन शिक्षा केन्द्रों को कर दिया गया है। जन शिक्षा केन्द्र से प्रतिदिन प्रश्न पत्र केन्द्राध्यक्ष को सौंपा जायेगा एवं परीक्षा समाप्ति के दिन ही अमूल्यांकित उत्तर पुस्तिकाओं के बंडल जन शिक्षा केंद्र पर जमा किए जाएगें। कलेक्टर श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने परीक्षा के सुचारू रूप से संचालन के लिए जिला स्तर पर तीन निरीक्षण दलों का गठन कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, कार्यालय सहायक आयुक्त, कार्यालय जिला शिक्षा केन्द्र से किया गया है। विकासखंड स्तर से विकासखंड शिक्षा अधिकारी एवं विकासखंड स्त्रोत समन्वयक द्वारा प्रत्येक विकासखंड में अपने स्तर से विकासखंड स्तरीय निरीक्षण दल का गठन किया गया है।

डॉ. पटैया की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा और स्वास्थ्य शिविर का आयोजन आज

बैतूल। पीड़ित मानवता की मिसाल और कोरोना काल में अपने उल्लेखनीय योगदान देने वाले डॉ. सुमित पटैया की स्मृति में रविवार, 23 फरवरी को दोपहर 12 बजे बैतूल नगर के सदर स्थित किराड़ मंगल भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर उनकी स्मृति में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर भी आयोजित किया जाएगा, जिसमें जरूरतमंदों को चिकित्सा परामर्श एवं उपचार की सुविधा दी जाएगी।

गरीब बच्चों के लिए वरदान बनी निशुल्क कोचिंग

बैतूल। जिले में आर्थिक रूप से कमजोर और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए सरकारी परीक्षाओं की तैयारी कर पाना हमेशा से एक बड़ी चुनौती रही है। महंगी कोचिंग और रहने की समस्या के कारण कई योग्य छात्र-छात्राएं अपनी तैयारी अधूरी छोड़ देते हैं। ऐसे बच्चों के लिए समाजसेवी राजेश सरियाम द्वारा निशुल्क कोचिंग चलाई जा रही है, जिसमें महिला पर्यवेक्षक परीक्षा की विशेष तैयारी कराई जाती है। यह कोचिंग पिछले 30 वर्षों से लगातार संचालित हो रही है और अब तक सैकड़ों विद्यार्थी सरकारी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर चुके हैं। खास बात यह है कि संस्थान की ओर से लिखित नोट्स और ऑडियो नोट्स पूर्णतः निशुल्क उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे दूर-दराज के छात्र भी आसानी से परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं। महिला पर्यवेक्षक परीक्षा के सिलेबस के आधार पर विभिन्न कोचिंग संस्थानों से महत्वपूर्ण नोट्स एकत्रित किए गए हैं और गूगल व यूट्यूब के माध्यम से महत्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन कर विद्यार्थियों को पढ़ाया जा रहा है। बैतूल के साथ-साथ प्रदेश के अन्य जिलों के बच्चे भी इस ऑनलाइन कोचिंग का लाभ उठा रहे हैं।

अयोध्या में अतिथि गृह निर्माण के लिए 21 लाख रुपए का सहयोग

विश्व हिन्दू परिषद् मध्य भारत प्रांत द्वारा प्रबुद्ध जन गोष्ठी का आयोजन

सीहोर (नप्र)। विश्व हिन्दू परिषद् मध्य भारत प्रांत द्वारा वाटर पार्क में भविष्य का भारत और हमारी भूमिका विषय पर प्रबुद्ध जन गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे ने प्रबुद्धजनों को संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी अखिलेश राय के द्वारा की गई।

राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र अयोध्या में विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा विशिष्ट अतिथि गृह के निर्माण के लिए राय परिवार के द्वारा 21 लाख रुपए का सहयोग प्रदान किया गया। प्रबुद्धजन गोष्ठी में विधायक सुदेश राय और श्रीमति अरूणा राय भी उपस्थित रहे। गोष्ठी का शुभारंभ श्रीराम दरबार के समक्ष दीप प्रज्जवलित माल्यार्पण कर किया। केन्द्रीय संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे ने कहा की हिन्दू समाज के सम्मुख चुनौतियाँ है, इन चुनोतियों से हिन्दू समाज को ही निपटना है संकट से टकराने और आवश्यकताओं को पूरा करने में समाज का सक्रिय योगदान आवश्यक है। उन्होने कुटुंब पर भी ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। देश की एकता समसरता अखंडता के लिए नागरिकों के कर्तव्यों को उन्होने बताया। सामाजिक समरसता को लेकर कहा की ऐसा नहीं करना चाहिए की हिन्दू हिन्दू से ही दूर हो जाए हमें सब को साथ लेकर चलना है। बांग्लादेश में हिन्दू पर हो रहे अत्याचार को लेकर परांडे ने कहा की कटोगे तो बटोगें बांग्लादेश इसी कटने का परिणाम है। हिन्दू आलस में है सरकार के भरोसे है। इस लिए हमारे रोजगार कोई और छीन रहा है जिस कारण हिंदूओं के लिये रोजगार नही बचा है। भारत में हिन्दू समाज कि सजगता ही देश को बंटने से बचा सकती है।

विश्व हिन्दू परिषद, मध्य भारत प्रांत

श्री राजेंद्र सूरी शास.महा. सरदारपुर- राजगढ़ में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया

धार। श्री राजेंद्र सूरी शास.महा. सरदारपुर- राजगढ़ में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की सिल्वर जुबली कार्यक्रम प्रभारी प्राचार्य प्रोफेसर एलएस अलावा की अध्यक्षता में एवं नोडल ऑफिसर प्रोफेसर सरिता जैन के मार्गदर्शन में मनाया गया। इस अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रो.अलावा ने भारतीय भाषाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता प्रो.सरिता जैन ने बताया कि नवंबर 1999 को यूनेस्को ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस को स्वीकृति प्रदान की तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इसे स्वीकार किया और 21फरवरी सन् 2000 में पहला अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया। हिन्दी विश्व की सर्वाधिक, बोली जाने वाली चौथे नंबर की भाषा है ,प्रथम चीनी भाषा मंदारिन , द्वितीय स्थान पर स्पेनिश, तृतीय स्थान पर अंग्रेजी, है। हमें सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए, डॉ डी एस मुजाल्दा ने भाषा पर अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया । अंजली कुमावत बीएससी द्वितीय वर्ष ने भी अपने विचार व्यक्त किए ।

इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया प्रथम स्थान पर अंजली कुमावत तथा द्वितीय स्थान पर आयुषी सिंगार रही।

प्रश्न मंच प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें लगभग 50 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया प्रथम स्थान पर मधुबाला लछेटा बीएससी तृतीय वर्ष एवं अंजली कुमावत बीएससी द्वितीय वर्ष संयुक्त रूप से प्रथम रही,मुमल बीएससी द्वितीय द्वितीय स्थान पर एवं किरण भिडे , महेश शंकर राठौर तृतीय स्थान पर रहे ।

संचालन डॉ मोहित सिंह चौहान ने किया और आभार मीनाक्षी राठौर ने माना । कार्यक्रम में डॉ ममता दास, डॉ राकेश शिंदे, डॉ जितेन्द्र भगोरे, लालिमा विजयवर्गीय, डॉ राधा अलांसे, डॉ रीना खांडेकर, स्नेहलता मण्डलोई, विजया दरबार, महेश उपाध्याय, महेन्द्र अलावा, दीपेश डॉंगी, कमलेश चौहान,अजय राठौर, बिंदु गोखले, इंदरसिंह, एवं बड़ी संख्या में महाविद्यालय के छात्र -छात्राए उपस्थित थे।

एक बड़ी वार फिल्म ‘बॉर्डर-2’ की आहट

अगले दो साल में सनी देओल खूब धमाल मचाने वाले हैं। उनके खाते में इस समय कई बड़ी फिल्में हैं। इनमें जाट, लाहौर 1947’और ‘बॉर्डर-2’ शामिल है। पहली दो फिल्मों पर वो काम पूरा कर चुके हैं, अब बारी है ‘बॉर्डर-2’ की। 1997 में आई बॉर्डर के सीक्वल के लिए फैंस भी एक्साइटेड हैं। इसे इंडिया की सबसे बड़ी वॉर फिल्म बताया जा रहा है। सनी देओल की फिल्म को लेकर उत्सुकता बनी हुई है।

बॉलीवुड की कई फिल्मों को इतना अच्छा रिस्पॉन्स मिला है कि मेकर्स ने उनका सीक्वल भी बनाया। अब ब्लॉकबस्टर फिल्म ‘बॉर्डर’ का सीक्वल ‘बॉर्डर-2’ चर्चा में है। फिल्म ‘बॉर्डर 2’ साल 2026 की जनवरी में सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली है। इस बीच इस फिल्म से जुड़ा बड़ा अपडेट सामने आया। दरअसल, टी-सीरीज ने एक तस्वीर शेयर कर फिल्म की शूटिंग के बारे में अपडेट दिया है। वहीं, फिल्म ‘बॉर्डर 2’ के एक्टर वरुण धवन ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से अपने को-स्टार सनी देओल के साथ की एक तस्वीर शेयर कर सभी को एक्साइटेड कर दिया।

फिल्म ‘बॉर्डर 2’ को प्रोड्यूस करने वाली कंपनी टी-सीरीज ने एक फोटो शेयर की। इसमें देख सकते हैं कि वरुण धवन और सनी देओल के फिल्म की टीम नजर आ रही है। इसके साथ अपडेट दिया गया है कि फिल्म ‘बॉर्डर 2’ की शूटिंग झांसी की छावनी में हो रही है। वहीं, वरुण धवन ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर भी एक तस्वीर शेयर की, जिसमें वे सनी देओल के साथ एक मिलिट्री टैंक पर बैठे नजर आ रहे हैं। वरुण धवन ने इस तस्वीर के साथ कैप्शन लिखा ‘सनी डेज. हमारे साब जी।’ वरुण धवन की इस तस्वीर को लोग पसंद कर रहे हैं और कमेंट कर रहे हैं।

एक यूजर ने लिखा कि ये फिल्म तो ब्लॉकबस्टर है। एक यूजर ने लिखा आई लव यू सनी पाजी। एक यूजर ने लिखा फिल्म का इंतजार नहीं कर सकते। एक और यूजर ने लिखा जल्दी से रिलीज करो फिल्म। अनुराग सिंह के डायरेक्शन में बनने वाली फिल्म ‘बॉर्डर-2’ में सनी देओल और वरुण धवन के अलावा दिलजीत दोसांझ और अहान शेट्टी नजर आने वाले हैं। फिल्म ‘बॉर्डर-2’ साल 2026 के रिपब्लिक डे यानी 26 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म ‘बॉर्डर 2’ साल 1997 में जेपी दत्ता के डायरेक्शन में बनी फिल्म ‘बॉर्डर’ का सीक्वल है। वो एक मल्टीस्टारर फिल्म थी और उसके गाने आज भी लोगों जुबान पर हैं।

रिपोर्ट से पता लगा कि ‘बॉर्डर-2’ की शूटिंग कश्मीर में शुरू होने वाली है। फिल्म में वरुण धवन फौजी का किरदार निभा रहे हैं। फिल्म के पहले कुछ सीन में उनके ही फ्रेम होंगे। उनका रोल फिल्म में इंटेंस एक्शन के अलावा इमोशन से भरा होगा। सनी देओल के अलावा वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ और अहान शेट्टी भी फिल्म में पावरफुल रोल में है।

दिलजीत दोसांझ ‘बॉर्डर 2’ में एयरफोर्स पायलट का किरदार निभाने वाले हैं, जो वॉर फिल्म में हाई फ्लाइंग एलिमेंट एड करेंगे। वो फरवरी के आखिर में अपने हिस्से का शूट शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा अहान शेट्टी नेवी ऑफिसर बन रहे हैं, जो दिलजीत के साथ ही अंडरवॉटर सीक्वेंस शूट करते दिखेंगे। दरअसल ‘बॉर्डर 2’ के लिए दिलजीत दोसांझ अपने एयरक्राफ्ट सीन्स की शूटिंग मुंबई में करेंगे, जो अप्रैल और मई में होगी। वहीं कुछ एक्शन पैक्ड सीक्वेंस को उत्तर प्रदेश के झांसी में फिल्माए जा रहे हैं।

मेकर्स ने फिल्म में अलग-अलग लोकेशन पर इसलिए शूट करने का प्लान किया है, ताकी पिक्चर के विजुअल्स में वैरायटी जोड़ी जा सके। मेकर्स 10 अप्रैल तक मेकर्स शूटिंग खत्म करने की प्लानिंग कर रहे हैं। पता लगा कि ‘बॉर्डर-2’ में ओरिजिनल कास्ट की वापसी होगी। सनी देओल, सुनील शेट्टी और बाकी कैरेक्टर क्लाइमैक्स में एक साथ दिखाई देंगे। जहां सभी स्टार्स अहम किरदार निभाएंगे। क्लाइमैक्स के लिए सभी एक्टर्स का शूट प्रोडक्शन खत्म होने से पहले किया जाएगा। मेकर्स फिल्म को 23 जनवरी 2026 में लाने की प्लानिंग कर रहे हैं।

‘कृष 4’ में इस खूबसूरत एक्ट्रेस की एंट्री

पसंदीदा सुपरहीरो फिल्म फ्रेंचाइजी ‘कृष’ की चौथी किस्त का इंतजार दर्शक लंबे समय से कर रहे हैं। फैंस की नजरें इस फिल्म की सभी अपडेट्स पर बनी है। ऐसे में अब फिल्म से जुड़ी एक ऐसी खबर सामने आ रही है, जो दर्शकों की एक्साइटमेंट को सातवें आसमान पर पहुंचा देगी। दरअसल, ऋतिक रोशन की फिल्म में बॉलीवुड की एवरग्रीन एक्ट्रेस रेखा की एंट्री हो गई। इस पर खुद फिल्म के निर्देशक राकेश रोशन ने मुहर लगाई।

ऋतिक रोशन की हाल ही में नेटफ्लिक्स पर ‘द रोशंस’ डॉक्यूमेंट्री-सीरीज रिलीज हुई, जिसमें रोशन परिवार के संघर्ष और सफलता की इनसाइड स्टोरी को दर्शाया। यह डॉक्यूमेंट्री-सीरीज दर्शकों और क्रिटिक्स से पॉजिटिव रिस्पॉन्स बटोर रही। इसकी सफलता के लिए हाल ही में राकेश रोशन ने एक सक्सेस पार्टी भी होस्ट की, जिसमें बॉलीवुड के कई दिग्गज स्टार्स ने शिरकत की। इन्हीं में से थीं एक्ट्रेस रेखा, जिनके ग्लैमरस लुक ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा।

इस बीच मीडिया ने निर्देशक राकेश से कृष 4 में रेखा के नजर आने को लेकर सवाल किया, जिसके जवाब में राकेश ने हामी भरते हुए कहा कि सब कुछ है, आपको देखने को मिलेगा। अब राकेश रोशन के इस बयान से यह बात साफ है कि ऋतिक रोशन की ‘कृष 4’ में रेखा की झलक देखने को मिलेगी। रेखा पहले भी इस सुपरहीरो फिल्म का हिस्सा रह चुकी हैं. उन्होंने कृष और कृष 3 में अहम भूमिका से दर्शकों का मनोरंजन किया था. ऐसे में अब कयास लगाए जा रहे हैं कि ‘कृष 4’ में भी वह अपनी दमदार एक्टिंग से दर्शकों का दिल जीत लेंगी।

रियल बॉक्स

आस्था के पवित्र संगम में सितारों की डुबकी

हेमंत पाल

लेखक ‘सुबह सवेरे’ इंदौर के स्थानीय संपादक है।

धर्म और आस्था का सबसे बड़ा समागम प्रयागराज का महाकुंभ अपनी पूरी भव्यता के साथ चल रहा है। अब तक करोड़ों श्रद्धालु और संतों के साथ देश और दुनिया के हर क्षेत्र की कई बड़ी हस्तियां इस आयोजन के पवित्र संगम में डुबकी लगा चुकी। ऐसे में फिल्म इंडस्ट्री से जुड़ी हस्तियां भी पीछे नहीं रही। कलाकारों, संगीत से जुड़ी नामचीन हस्तियों और टेलीविजन के लोगों ने महाकुंभ में शिरकत की और गंगा, जमुना और सरस्वती की पवित्र त्रिवेणी के संगम में स्नान कर आध्यात्मिक संतुष्टि महसूस की। प्रयागराज महाकुंभ के इस भव्य महाआयोजन का आनंद लेने के लिए करोड़ों श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। ऐसे में आम लोगों के साथ कई फिल्मी हस्तियों ने भी महाकुंभ में शामिल होकर सनातन धर्म को करीब से जाना। खास बात यह कि ये हस्तियां बिना किसी लवाजमे के यहां पहुंचे और पुण्य के भवसागर में आस्था की डुबकी लगाई।

इस पवित्र संगम में जिस भी फ़िल्मी हस्ती ने डुबकी लगाई, उसने बिना किसी दिखावे के धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा दर्शाई। कुछ लोगों को छोड़ दिया जाए, तो ज्यादातर फ़िल्मी लोग अपनी पहचान बताए बिना महाकुंभ में आए और गंगा नहाए। हेमा मालिनी और रवि किशन जैसे लोगों के आसपास जरूर सुरक्षा व्यवस्था नजर आई। जबकि, दक्षिण के कई बड़े सितारे ऐसे भी आए जो सामान्य व्यक्ति की तरह महाकुंभ में पहुंचे। इस इलाके के एक नामी खलनायक ने तो अपनी पहचान जाहिर करने पर नाखुशी तक जाहिर की। उनका कहना था कि ये मेरी निजी जिंदगी है, इसमें किसी को दखल देने का अधिकार नहीं है। महाकुंभ में हस्तियों को लेकर कुछ अलग प्रसंग भी हुए, उनमें 90 के दशक की मशहूर बॉलीवुड एक्ट्रेस ममता कुलकर्णी, माला बेचने वाली मोनालिसा और आईआईटियन संत भी हैं। ममता कुलकर्णी ने महाकुंभ 2025 के दौरान किन्नर अखाड़ा में शामिल होकर संन्यास ग्रहण किया। उनके इस फैसले को जमकर प्रचार भी मिला। लेकिन, संतों के आपसी विवाद की वजह से सात दिन बाद ही धार्मिक नेताओं के विरोध के कारण उन्हें महामंडलेश्वर पद से हटा दिया गया।

हिंदी और भोजपुरी के मशहूर एक्टर और सांसद रवि किशन भी संगम में डुबकी लगाने महाकुंभ में पहुंचे। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपना वीडियो पोस्ट किया, जिसमें वे संगम में डुबकी लगाते और पूजा करते दिखाई दिखे। वीडियो पोस्ट करते हुए रवि किशन ने अपनी भावना जाहिर की और लिखा ‘तीर्थराज प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ में संगम में स्नान के पश्चात पूजा किया। देश की आस्था, संस्कृति की प्रतीक पवित्र गंगा और यमुना को निर्मल और अविरल करने का कार्य पूरा हो, इसकी प्रार्थना की!’ जाने माने एक्टर अनुपम खेर ने भी महाकुंभ में अपनी आस्था व्यक्त करते हुए पवित्र स्नान किया। उन्होंने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर स्नान की झलक शेयर की और इस आध्यात्मिक क्षण में भगवान से प्रार्थना करते हुए मंत्रों का जाप किया। इस एक्टर ने यह भी कहा कि अब उनका जीवन सफल हो गया। एक्टर भक्ति में लीन नजर आए। फिल्म कोरियोग्राफर एंड डायरेक्टर रेमो डिसूजा भी संगम में डुबकी लगाने पहुंचे। इस दौरान एक्टर फैंस से अपना चेहरा छुपाकर स्नान किया। स्नान के बाद रेमो ने सोशल मीडिया पर एक शानदार वीडियो शेयर किया।

अभिनेत्री नीना गुप्ता और संजय मिश्रा भी महाकुंभ में पहुंचे। दोनों ही कलाकारों ने मेले का भ्रमण किया और संगम में डुबकी के साथ गंगा को नमन कर अपनी आने वाली फिल्म की सफलता की कामना की। दोनों ही कलाकार अपनी अगली फिल्म ‘वध-2’ के प्रचार के लिए भी प्रयागराज पहुंचे। नीना गुप्ता ने कहा कि मां गंगा के पवित्र जल में स्नान का अवसर एक आध्यात्मिक यात्रा जैसा अहसास था। इतने बड़े आयोजन में आध्यात्मिकता के भावों को एकाकार होते देखना सुखद लगा। भीड़ के भावों को देखा तो लंबे समय बाद इंतजार पूरा होने के पल को ‘अद्वितीय’ बताया। प्रयागराज में महाकुंभ मेले के अपने आध्यात्मिक यात्रा के दौरान इसके भव्य स्वरूप से वह आश्चर्य के भावों से भरी नजर आईं। अभिनेता संजय मिश्रा भगवा कपड़ों में यहां पहुंचे। उनकी भावना थी, कि यहां पर सब कुछ है। आस्था का सागर देखना और लोगों का उत्साह इतना सुखद है कि शब्दों में बयान करना मुश्किल है। गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम पर आयोजित होने वाला महाकुंभ का हिस्सा होना सुखद अनुभव है।

फिल्म अभिनेता राजकुमार राव ने पत्नी पत्रलेखा के साथ पवित्र समागम का हिस्सा बनने के लिए ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त किया। कहा कि हम इस पल का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। मेरी पत्नी और मेरी मां की गंगा में गहरी आस्था है और यह तीर्थयात्रा हमारे दिल के बहुत करीब है। हम पिछले महाकुंभ में भी डुबकी लगाने का सौभाग्य अर्जित कर चुके हैं। वे महाकुंभ की हवाओं में बिखरे आध्यात्मिकता के भावों और लाखों-करोड़ों लोगों को कुंभ स्नान करते देखकर अभिभूत दिखे। 12 साल बाद कुंभ में आने और संगम में डुबकी लगाने पर उत्साहित भी दिखाई दिए। वे यहां परमार्थ निकेतन आश्रम में ठहरे और कहा कि वे भाग्यशाली हैं। ईश्वर दयालु है कि हमें यहां पुण्य की डुबकी लगाने का अवसर मिला। ‘मैंने प्यार किया’ से धूम मचाने वाली एक्ट्रेस भाग्यश्री अपने बच्चों अवंतिका और अभिमन्यु दासानी के साथ प्रयागराज पहुंचीं और सोशल मीडिया पर वहां की झलकियां शेयर कीं। प्रसिद्ध लोक गायिका मालिनी अवस्थी ने भी भक्तों से अपने पवित्र स्नान को आध्यात्मिक ज्ञान के साथ पूरक करने का आग्रह किया। महाकुंभ केवल पवित्र जल में स्नान करने के बारे में नहीं है। यह संतों से ज्ञान प्राप्त करने और आध्यात्मिकता को अपनाने के बारे में है। इस दिव्य अवसर को चूकना एक बड़ी क्षति होगी।

डुबकी लगाई और सोशल मीडिया पर दिखाई दिए

कलाकार मिलिंद सोमन भी पत्नी अंकिता कोंवर के साथ प्रयागराज आए। इस जोड़े ने मौनी अमावस्या के शाही स्नान वाले दिन संगम में डुबकी लगाई। एक्टर और उनकी पत्नी भक्ति में डूबे दिखे। दोनों ने अपनी कई फोटो सोशल मीडिया पर शेयर की हैं। फिल्मों की ड्रीम गर्ल और सांसद हेमा मालिनी भी मौनी अमावस्या के मौके पर महाकुंभ पहुंची। इस दौरान उनके संग बाबा रामदेव भी नजर आए। उनकी कई फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए। अभिनेत्री हिमानी शिवपुरी ने भी महाकुंभ मेले में शिरकत की। उन्होंने त्रिवेणी संगम पर स्नान किया और सोशल मीडिया पर अपनी फोटो शेयर की। अभिनेत्री और काजोल की बहन तनीषा मुखर्जी भी महाकुंभ में स्नान के लिए पहुंची। अदाकारा ईशा गुप्ता भी संगम में डुबकी लगाते हुए नजर आई। जिसकी कई तस्वीरें उन्होंने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम पेज पर शेयर की हैं। फिल्म ‘जन्नत’ में नजर आई एक्ट्रेस सोनल चौहान भी प्रयागराज के महाकुंभ पहुंची। उन्होंने महाकुंभ में त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाई। इसके अलावा उन्होंने सनातनी धर्म गुरु स्वामी कैलाशनंद गिरी जी से भी मुलाकात कर आशीर्वाद लिया।

अभिनेत्री पूनम पांडे भी महाकुंभ में दिखाई दी। संगम में स्नान करते हुए कई तस्वीरें शेयर की। उन्होंने लिखा ‘महाकुंभ ... जीवन को करीब से देखना, जहां 70 साल का बुजुर्ग घंटों नंगे पैर चलता है, जहां आस्था की कोई सीमा नहीं होती। जिन लोगों ने अपनी जान गंवाई, उनके लिए गहराई से महसूस कर रही हूँ, उम्मीद है कि उन्हें मोक्ष मिलेगा। यहां की भक्ति ने मुझे निःशब्द कर दिया। फिल्म इंडस्ट्री के कई स्टार्स अब तक महाकुंभ मेले पहुंचकर संगम नदी में स्नान कर चुके हैं। ईशा गुप्ता, हेमा मालिनी, अनुपम खेर, सिंगर गुरु रंधावा, एक्ट्रेस तनीषा मुखर्जी, केजीएफ एक्ट्रेस श्रीनिधि शेट्टी, फिल्ममेकर एकता कपूर समेत तमाम फिल्मी सितारे महाकुंभ में भाग ले चुके। वहीं इससे पहले फेमस इंटरनेशनल रॉक बैंड कोल्ड प्ले के सिंगर क्रिस मार्टिन व एक्ट्रेस डकोटा जॉनसन ने भी महाकुंभ में स्नान किया था।

मॉडल हर्षा रिछारिया, माला बेचने वाली कत्थई आंखों वाली मोनालिसा, आईआईटीयन बाबा और पूर्व अभिनेत्री ममता कुलकर्णी इस महाकुंभ के कुछ ऐसे पात्र हैं, जो कई दिनों तक चर्चा में बने रहे। सबसे ज्यादा माहौल बना ममता कुलकर्णी का जो 90 के दशक की लोकप्रिय हीरोइन थी। अपने बोल्ड लुक और सुंदरता के लिए लोकप्रिय ममता करीब 19 साल पहले गायब हो गई थी। इनका नाम अंडरवर्ल्ड से लेकर ड्रग्स माफिया और कई गुंडों तक से जुड़ता रहा। एक बड़ी ड्रग्स तस्करी में नाम आने के बाद तो 15 साल से कोई पता ही नहीं था। अचानक ममता कुलकर्णी इस महाकुंभ में अवतरित हुई और किन्नर अखाड़ा की महामंडलेश्वर बन गई। संगम तट पर पिंडदान किया और उन्हें नाम मिला यामाई ममता नंद गिरि। लेकिन, सप्ताह भर में ही उनकी सारी कीर्ति ध्वस्त हो गई साधु-संतों के विरोध के बाद उन्हें महामंडलेश्वर के पद से हटा दिया गया। ऐसी ही लोकप्रियता एक माला बेचने वाली लड़की मोनालिसा को उसकी कत्थई आंखों और नैसर्गिक सुंदरता के कारण मिली। महाकुंभ में वे इतनी ज्यादा चर्चित हो गई कि उसे परिवार ने वापस अपने मध्यप्रदेश के गांव महेश्वर (जिला खरगोन) भेज दिया। लेकिन, उसकी सुंदरता ने फिल्म इंडस्ट्री को प्रभावित किया कि उसे एक फिल्म की हीरोइन बना दिया गया। फ़िलहाल वे मुंबई में एक्टिंग की ट्रेनिंग के साथ अपने मेकओवर में लगी है। इन दोनों के अलावा मॉडल हर्षा रिछारिया और आईआईटीयन बाबा भी कुछ दिन ख़बरों में छाए रहे, पर समय के साथ ये सभी हाशिए पर चले गए।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अक्षय खन्ना का फिल्मी ग्राफ कभी हिट कभी फ्लॉप

अशोक जोशी

जरूरी नहीं कि एक ही नाम के दो इंसानों की किस्मत उनकी राशि के अनुरूप ही हो। अक्षय ऐसा ही नाम है जो अक्षय कुमार के रूप में तो हिट है, लेकिन अक्षय खन्ना के रूप में अब तक फ्लॉप रहा। अपने 27 साल के करियर में अक्षय खन्ना की 22 फिल्में फ्लॉप हुई। उन्हें विनोद खन्ना के बेटे के रूप में ज्यादा पहचान मिली। लेकिन, हाल ही में प्रदर्शित ‘छावा’ ने उनके माथे पर लगे फ्लॉप एक्टर के दाग को धोने का काम किया। इस फिल्म में खलनायक होने के बावजूद वह नायक के बराबर लोकप्रियता पा रहे हैं।

अक्षय खन्ना को कभी बॉलीवुड का हैंडसम हंक कहा जाता था। उन्होंने बॉलीवुड में बहुत मुश्किलों का सामना किया। जैसे-जैसे उनका करियर आगे बढ़ा, उन्होंने कई सफल फिल्मों में काम किया, लेकिन फिर भी वे सोलो हिट देने में असफल रहे। अक्षय खन्ना ने बॉम्बे इंटरनेशनल स्कूल, बाबुलनाथ से पढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने लॉरेंस स्कूल, लवडेल (ऊटी) से एचएससी करने के बाद अपने करियर की शुरुआत अपने पिता विनोद खन्ना की फिल्म ’हिमालय पुत्र’ (1997) से की थी। डायरेक्टर पंकज पाराशर की इस फिल्म में विनोद खन्ना और हेमा मालिनी लीड रोल में थे। इस फिल्म में अक्षय खन्ना अंजला जावेरी के साथ सेकेंड लीड रोल में थे। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हुई थी।

खराब शुरुआत के बाद, अक्षय को जेपी दत्ता की ‘बॉर्डर’ (1997) में देखा गया। जिसमें उनके किरदार को लोगों से सराहना मिली। ‘बॉर्डर’ 1997 की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर थी। इसके बाद उन्होंने ताल (1999), दिल चाहता है (2001), हमराज़ (2002), हंगामा (2003) हलचल (2004), और रेस (2008) सहित कुछ हिट फिल्मों में काम किया। लेकिन, हिट फिल्मों के साथ भी उन्हें असफलता का दौर उबार नहीं पाया। 27 साल के करियर में अक्षय ने कई फ्लॉप फिल्में दी जिनमें ढिशूम, इत्तफाक, द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर, दीवार, सलाम-ए-इश्क, नकाब, गांधी माई फादर, शॉर्टकट-द कॉन इज ऑन, डोली सजा के रखना, कुदरत और ‘आप की खातिर’ शामिल हैं।

एक तरफ जहां अक्षय कई फ्लॉप फिल्में दे रहे थे, वहीं वे गंजेपन की समस्या से भी जूझ रहे थे। बताया जाता है कि टेंशन और तनाव के कारण उनके लुक में काफी बदलाव आया। गंजेपन की वजह से वो काफी मायूस भी हो गए। हालांकि, उन्होंने सच्चाई को स्वीकार किया और अपने काम के लिए और मेहनत की और इस बार उनकी मेहनत रंग लाई। अक्षय खन्ना ’छावा’ में औरंगजेब का किरदार निभाकर हर किसी की नजर में फिर से आ गए। एक्टर के काम की खूब तारीफ हो रही है। औरंगजेब के किरदार में उनकी कलाकारी को देखकर हर कोई दंग रह गया है।

फिल्म में उन्हें सीमित फुटेज दिया गया, उसके बावजूद उनका काम निखर कर सामने आया। ‘छावा’ में अक्षय खन्ना की सफलता में सबसे बड़ा हाथ उनके मेकअप का रहा है। इस फिल्म में अक्षय खन्ना ने क्रूर मुगल शासक औरंगजेब का रोल किया और इसमें उनका जो लुक है, उसमें उन्हें पहचान पाना भी मुश्किल हो रहा है। कुछ दर्शकों ने स्वीकार किया है कि आवाज के कारण ही वह यह पता लगाने में कामयाब रहे कि यह और कोई नहीं बल्कि अक्षय खन्ना है। सफेद बाल, आंखों में काजल, सफेद बढ़ी दाढ़ी, चेहरे पर झुर्रियों में अक्षय खन्ना मुगल काल के शासक के गेटअप में काफी दमदार लग रहे हैं। इस लुक को देखकर कोई कह नहीं सकता कि ये अक्षय खन्ना हैं।

फिल्म में एक दृश्य है जिसमें औरंगजेब बने अक्षय की आंखों से अंगारे बरस रहे हैं, वे गुस्से में दुश्मनों को देख रहे हैं। जबकि, उनके चेहरे पर सफेद जुल्फें लहरा रही हैं। इसे देखकर एक बार तो दर्शकों के दिल में सिहरन दौड़ जाती है। ’छावा’ में औरंगजेब की जबरदस्त भूमिका करने और दर्शकों की भरपूर प्रशंसा हासिल करने वाले अक्षय खन्ना को फिल्म में रोल तो नायक के समकक्ष दमदार मिला, लेकिन पारिश्रमिक के मामले में वह हीरो तो क्या हीरोइन रश्मि मदान से भी पिछड़ गए।

फिल्म के नायक विक्की कौशल को संभाजी महाराज की भूमिका के लिए जहां 10 करोड़ और नायिका रश्मिका मंदाना को महारानी येसूबाई भोंसले की भूमिका के लिए चार करोड़ पारिश्रमिक मिला, वहीं दमदार अभिनय के बावजूद अक्षय खन्ना को नायक से चौथाई और नायिका से आधे ढाई करोड के पारिश्रमिक से ही संतोष करना पड़ा। लेकिन, पारिश्रमिक कभी अक्षय खन्ना का विषय नहीं रहा है। दर्शकों से मिला प्यार और नफरत का मूल्य उनके फिल्मी पारिश्रमिक में सबसे भारी है।

विक्की कौशल अभिनीत फिल्म छावा का जिस समय निर्माण आरम्भ हुआ औरंगजेब की भूमिका के लिए पहले अनिल कपूर का नाम तय हुआ था। उनके मना करने पर यह भूमिका अक्षय के खाते में आयी। इसे कुदरत का करिश्मा ही माना जाएगा कि नियति और भाग्य कहकर नहीं आते कि कब किसके भाग्य खुल जाए। वैसे तो छावा फिल्म शिवाजी सावंत के जिस उपन्यास फिल्म आधारित है, वह अपने आपमें इतना दमदार है कि पाठक उसे एक बार हाथ में लेने के बाद पूरा करने तक छोड़ता नहीं।

अभी तक यही माना जाता था कि बॉलीवुड के फिल्मकार अच्छी फिल्में बनाना भूल गए हैं। इसलिए दक्षिण भारत की फिल्में बॉलीवुड पर नाम और दाम में भारी पड़ रही। उनको ‘छावा’ की सफलता और बॉक्स ऑफिस कीर्तिमान ने सटीक जवाब दिया। एक बार फिर साबित कर दिया कि फिल्मों की सफलता में कंटेंट सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। लेकिन, अक्सर उपन्यास पर आधारित फिल्मों के साथ इस तरह का न्याय कम ही देखने को मिलता है। फिल्म के निर्देशक लक्ष्मण उतेकर ने इसके साथ पूरा न्याय करने के साथ 130 करोड़ के बजट से पूरी भव्यता प्रदान की। इस भव्यता में औरंगजेब के रूप में अक्षय खन्ना का खौफनाक अंदाज और ज्यादा दहशत का माहौल रचने में भी वे कामयाब रहे।

आधुनिकता की जद में युवा और मातृभाषाओं पर मंडराता खतरा

सरोकार

डॉ. ललित कुमार

लेखक इन्वर्टिस विश्वविद्यालय बरेली में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष है।

21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस देश के हर शिक्षण संस्थानों में मनाया गया। सभी प्रान्त मातृभाषा को बचाने के लिए अपने अपने तरीके से भाषा की चिंता पर विचार विमर्श करते हैं। इस अवसर पर अपनी मातृभाषा को याद करना और उसके बारे में चिंता करने का सवाल कितना सही हो सकता है। यह शोध का विषय है। कोई भी मातृभाषा सामाजिक परंपराओं का एक ऐसा माध्यम होती है, जिसके द्वारा हम अपने सगे संबंधियों से अपनी मातृभाषा में बात करते हैं, और अपने आपको बहुत सहज महसूस करते है, जिस भी तरीके से चाहे उस तरीके से आपस में बात कर सकते हैं। मातृभाषा हमारी संस्कृति की पहचान होती है, जिस पर हमें गर्व होता है। भाषा के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती, यह एकदम सही है। लेकिन देखना यह भी होगा कि आधुनिक तकनीकी जिस तरीके से वैश्विक मंच प्रदान कर रही है। अब सवाल यह खड़ा होता है कि भारतीय समाज आधुनिकता के मकडजाल में फंसकर कहीं अपनी युवा पीढ़ी को भाषाई परंपरा से तो दूर नही कर रहा हैं, इस पर ध्यान देना बहुत जरूरी है।

कुडुख भाषा हमारी मातृभाषा
कुडुख भाषा हमारी मातृभाषा

मातृभाषा को बचाने हमारा जन्म सिद्ध अधिकार हैं।
KURUKH PEOPLE WHO PROTECT AND PRESERVED - LONG LIVE, LONG LIVE
মাতৃভাষা কে বাঁচানো আমাদের জন্মগত অধিকার।

हमें पता होना चाहिए कि वर्ष 1700 ई. तक भारत में दुनिया का एक चौथाई धन रखा होता था, लेकिन अंग्रेजों के जाने के बाद उन्होंने इसे आधा प्रतिशत छोड़ा। हिंदी पूरे देश की मातृभाषा भले ही न बन पा रही हो, लेकिन हिंदी मीडियम में पढ़ने से देश सोने की चिड़िया नहीं बनेगी। इजरायल की आबादी 40 लाख से अधिक है, और भारत की आबादी करीब 140 करोड़ से अधिक। लेकिन हमसे ज्यादा नोबेल पुरस्कार भी इस देश को मिले है। क्योंकि उन्होंने दो हज़ार साल पुरानी अपनी हिब्रू भाषा को विकसित किया है। कुछ इसी तरीके से अपनी मातृभाषाओं को जीवित करके समाज और संस्कृति को सभ्य बनाया जा सकता है.

पिछले 70 सालों में भारतीय भाषाओं का कमजोर होना, चिंता का विषय है। भाषा को बचाने के लिए शब्दों की बड़ी अहमियत होती है। अगर शब्दों की समझ युवा पीढ़ी को नहीं होगी, तो भाषा पर पकड़ उनमें कहां से आएगी। शब्दों के ज़रिए वाक्यों की संरचना होती है, तब जाकर किसी भाषा को अच्छे से समझा और पढ़ा जा सकता हैं। भाषा ही हमें यह बताती है कि हमारे घर के आसपास और समाज में क्या चल रहा है? देश के आदिवासी क्षेत्रों में या उनके समुदायों में अलग-अलग प्रकार की मातृभाषाओं का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर किया जाता है।

मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ का ज्यादातर आदिवासी समाज गोंडी भाषा का इस्तेमाल करता हैं। आज उनके युवा पीढ़ी जगह-जगह कार्यक्रमों के ज़रिए गोंडी भाषा को बचाने की पहल कर रही हैं। इसी प्रकार झारखंड में करीब 16 मातृभाषाओं को द्वितीय राज्य भाषा का दर्जा मिला है, जिनमें संथाली, नागपुरी, कुरुख, मुंडारी, हो, उड़िया, कुरमाली, पंचपरनिया, खड़िया और मगही जैसी तमाम भाषाएं पूरे राज्य में बोली जाती हैं। यह कितनी अच्छी बात है कि एक ही राज्य में इतनी मातृभाषाएं बोली जाती है। अब सवाल यह है कि इन समुदायों के युवा अंग्रेजी माध्यम को अपनाकर रोजगार की चाह में अपनी मातृभाषा को भूलते जा रहे हैं, यह एक रिसर्च का विषय हो सकता है। अपनी मातृभाषा बोलते हुए जब कोई व्यक्ति किसी बड़े शहर में रोजगार की तलाश में जाता है, तो उसे शहरी समाज के सामने इस बात पर शर्मिंदगी उठानी पड़ती है कि शहरी समाज उनकी मजाक बनाते हैं। लेकिन यह एक ऐसा सच है, जिसे ठुकराया नहीं जा सकता।

वर्तमान में, मैं बरेली के जिस निजी विश्वविद्यालय में पढ़ाता हूं। उसमें देश के अनेक प्रांतो के छात्र पढ़ने के लिए आते हैं। अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर जब मैंने अपने विभाग (पत्रकारिता विभाग) की प्रथम वर्षीय छात्रा, जो झारखंड के गुमला जिले से यहां पढ़ने के लिए आई है। मैंने उससे कहा कि आप अपनी क्षेत्रीय भाषा कुडूख में कुछ प्रस्तुति दो, तो उसने सीधे कहा, सर मुझे मेरी क्षेत्रीय भाषा नहीं आती। हमारे घर में सब हिंदी बोलते हैं, और मैं बचपन से ही हिंदी बोलते हुए आई, मैं उस छात्रा की यह बात सुनकर एकदम अचंभित हुआ। यानी यहीं स्थिति आज हर युवा पीढ़ी की है, जो अपनी क्षेत्रीय भाषा को एक भाषा की चाह में छोड़ते जा रहे हैं।

रांची की जानी-मानी लेखिका एवं समाजसेवी डॉ. प्रेमी मार्था कुजूर जोकि एक एंथ्रोपोलोजिस्ट और भाषा की एक अच्छी जानकार हैं। मातृभाषा पर चर्चा करते हुए उन्होंने मुझे बताया कि झारखंड भाषाई संस्कृति के मामले में बहुत समृद्धशील राज्य है। राज्य के हर कोने में मातृभाषाओं की चमक चारों ओर दिखाई और सुनने को मिलती है। यहां की क्षेत्रीय भाषाओं में जो मिठास है, वह आपको कहीं ओर सुनने को नहीं मिलेगी। डॉ. प्रेमी ने झारखंड की एक शौर्यगाथा का जिक्र करते हुए बताया कि बिहार के रोहतासगढ़ जिले में जहां उरांव जनजाति का सबसे ज्यादा प्रभाव रहा, जब मुगलों ने उन पर आक्रमण किया, तो उरांव जनजाति की महिलाओं ने पुरुषों की वेशभूषा पहनकर मुगलों को उल्टे पांव भेजने के लिए विवश कर दिया था। उनकी शौर्यता की याद में तभी हर 12 वर्षों में एक बार 'जनी शिकार' पर्व मनाया जाता है।

आगे उन्होंने बताया कि उरांव जनजाति सभ्यता और संस्कृति के बचाव की खातिर अपनी जान की बाजी भी लगा देता है। इसमें कोई शक नहीं है, झारखंड में सबसे ज्यादा कुड़ुख और मुंडारी मातृभाषा सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। पिछले कुछ वर्षों में जनता का अपनी मातृभाषा के प्रति आकर्षक बढ़ा है। इसलिए भाषाई मीडिया (इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया) क्षेत्रीय भाषाओं में सूचनाओं को ग्रामीण समाज तक पहुंचाने का काम कर रही है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, पूरे विश्व में लगभग सात हज़ार भाषाएं बोली जाती हैं, जबकि आधुनिकता, उदारीकरण और वैश्विक व्यवसाय के कारण बड़ी संख्या में भाषाओं पर खतरा मंडरा रहा है। भारत में 500 से अधिक आदिवासी समुदायों की करीब 400 भाषाओं पर लुप्त होने का भी खतरा मंडरा रहा है।

प्रभात खबर समाचार पत्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, राज्य में 51 हज़ार छात्र अपनी मातृभाषाओं में पढ़ाई करते हैं, जोकि एक बड़ी उपलब्धि है। बिहार के एक बड़े हिस्से में मैथिली भाषा को 22 भाषाओं में से एक बड़ी भाषा के रूप में देखा जाता है। रांची के पूर्वी क्षेत्र की पंचपरगनिया भाषा को क्षेत्रीय संपर्क की भाषा कहा जाता है, जबकि खोरठा भाषा में झारखंड की एक सोंधी खुशबू महसूस की जाती है। संथाली भाषा जो उड़िया, बंगाल, बिहार, झारखंड, असम और मध्यप्रदेश के विभिन्न अंचलों में बोली जाने वाली एक बड़ी भाषा है। खड़िया भाषा ने (1880- 90) ऐतिहासिक नजरिए से अपने साहित्य को मजबूत करने का काम किया है। इस भाषा को लिखने वाले पहले व्यक्ति प्यारा केरकेट्टा थे, जिन्होंने साहित्यिक रूप से इस भाषा का सृजन किया। नागपुरी भाषा को नागवंशों की भाषा माना जाता है। मुंडारी भाषा का लिखित साहित्य करीब 200 साल पुराना है। मुंडारी भाषा से ही निकली हो भाषा के व्याकरण और शब्दकोश की रचना करने वाले चाईबासा के पहले व्यक्ति कानूराम देवगम थे, जिन्होंने 1914-15 में इस भाषा में गीतों को लिखने का सिलसिला शुरू किया।

इसी प्रकार भाषा ही समझ को युवाओं में पैदा करना शिक्षण संस्थानों के ज़रिए कार्यक्रमों को मदद से कराया जा सकता है। अगर युवाओं ने अपनी भाषा के शब्दों को भूलना शुरू कर दिया, तो धीरे-धीरे वाक्य को भी लिखना भूल जाएंगे। यानी अभिव्यक्ति की भाषा को इसी नजरिए से भी आगे बढ़ाने की कोशिश की जा सकती है।

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

पढ़ने के बाद छावा को पर्दे पर देखने का अनुभव

छावा' एक ऐसी ऐतिहासिक फिल्म जिसका मुझे लंबे अरसे से इंतज़ार था। जैसे इतिहास है फिल्म का, इसे मुझे बड़े परदे पर ही देखना था। विकी कौशल ने 3-4 साल या ज़्यादा समय से अपनी पर्सनाल्टि में परिवर्तन भी किया, वज़न बढ़ाया, बाल लंबे किए, युद्ध कौशल सीखा और सभी स्टंट खुद किए। सच कहूँ तो ये रोचकता यूँ बनी, जब मैंने सन् 2009 में शिवाजी सावंत द्वारा रचित पुस्तक 'छावा' का बारहवां संस्करण पढ़ा था। जिसका मराठी से हिंदी में अनुवाद वेदकुमार वेदालंकार ने किया था। साहित्य में रूचि रखने वाले मेरे बहुत से साथियों ने शिवाजी सांवत की कर्ण के व्यक्तित्व पर लिखी गई 'मृत्युंजय' पढ़ी है। उन लोगों की जानकारी के लिए बता दूँ कि छत्रपति शिवाजी के बेटे संभाजी राव पर ये फिल्म है। फिल्म की शुरूआत सीधे सम्भा जी के महाराज बनने से है इसलिये दर्शको को थोड़ा भ्रमित हो जाना पड़ता है। दो तीन स्त्रियाँ हैं, एक 'धाराऊ' जिन्हें सब सम्भा जी की दादी समझ बैठते हैं हालांकि वो उनकी धाय माँ होती है। जिस बारे में फिल्?म में एक बार एक वाक्य में दर्शको को बताया गया है जबकि किताब में 10-12 पन्ने से ज़्यादा धाराऊ के चरित्र का पुस्तक में वर्णन है। फिर सीधे उनकी पत्नी येशुबाई का परिचय है, जिस किरदार को रश्मिका मंदाना ने बेहद खूबसूरती से निभाया है। विकी कौशल सम्भाजी के व्यक्तित्व में फिट बैठते है। उन्हें और उनके अभिनय उनके युद्ध कौशल को देख आँखे चौंधिया जाती है। बस एक मुझे ये खामी दिखाई देती है जो चरित्र, श्री बालाजी आव, मोरोपंत पिंगले, अण्णाजी दत्तो वगैरह सब चूंकि वास्तव में मराठी और कोंकणी बोलते है उनका मराठा राज्य में होना औचित्य लगता है, परंतु जिस प्रकार (क्षमा करें तुलना कर रही हूँ) 'बाजीराव मस्तानी' में रणवीर सिंह, प्रियंका चोपड़ा ने उच्चारण में मराठी कोंकणी प्रभाव डाला था उसका जवाब नहीं था। विकी कौशल, रश्मिका मंदाना दोनों उच्चारण में कोंकणी जैसा प्रभाव नहीं डाल पाये। जिस पुस्तक 'छावा' से शीर्षक लिया गया है उसका

अर्थ शुरूआत में ही दर्शको को बताना था, परंतु 'छावा' पुस्तक की नींव से उपजे छावा (शेर का बच्चा) के बारे में अनजान दर्शको को नहीं बताया गया। संभाजी में इतनी कम उम्र में जो कुटिल राजनीति, रणकौशल, मातृभक्ति, प्रेम से व्यवहार करना वाले सारे गुण कहाँ से आये थे वो दर्शको को देखने नहीं मिले क्योंकि 'छावा' पुस्तक में शिवाजी से कथा प्रारंभ होती है। कथा शिवाजी व संभाजी के औरंगजेब की कैद, संघर्ष, राजनीति से शुरू होती है उसी में संभा जी का विकास होता है। मात्र नौ बरस की उम्र से लेकर 16 बरस तक की यात्रा को थोड़े विस्तार से बताते तो बेहतर होता। इस कथा, उनके विवाह और उनके युवराज बनने की, शिवाजी की दो पत्नियाँ आदि का दर्शको को परिचय नहीं कराया गया। जिनका बेटा रामराजे होता है। फिल्म में उनकी ईर्ष्?या व चालें दिखाई गई है। जिसका रोल दिव्या दत्ता ने अभिनीत किया है। इसमें कोई शक नहीं कि अभिनय में हर चरित्र खरा उतरा है। दरअसल रामराजे (दिव्या दत्ता) सायरोबाई (शिवाजी की दूसरी पत्नी) के बेटे है जिन्हें सायरो बाई युवराज बनाना चाहती थी, जिसके लिये उन्होंने अकबर से मैत्री का षड़यंत्र किया। मध्यातंर से पहले मूवी काफी छोटी थी, अगर निर्देशक चाहते तो शिवाजी का चरित्र, युवराज का निखरना, महाराज बनना दिखा सकते थे। दर्शको को जो संभाजी के जीवन से ज़्यादा परिचित नहीं है अचानक औरंगजेब से युद्ध करना और लगातार, युद्ध ही युद्ध दिखाते रहना अखर सकता है, पर जब आप उनकी जीवनी पढेंगे तब एहसास होगा शिवाजी से कहीं ज़्यादा कठिन जीवन संभाजी का रहा इसलिये मूवी में लगातार युद्ध का दिखाना लाज़िमी है। परंतु जिस तरह मराठों की संस्कृति में हर छोटे मोटे उत्सव पर नृत्य परंपरा हावी है, तो फिल्म में युद्ध की एकरसता भंग करने के लिये एक नृत्य डाला जा सकता था। संभाजी को बार-बार एक छोटे बच्चे का सुरंग में रोते-रोते पिता को पुकारने का दृश्य दिखाया है। उसकी स्पष्टता ये है कि जब औरंगजेब के चंगुल से निकल संभाजी, महाराज शिवाजी से मिलने वापस आते है तब सुरंग के रास्ते से उन्हें लाया जाता है। वो सुरंग (पुस्तक से) उन्हें जीवन भर याद रहती है। उस रास्ते में शिवाजी ने उन्हें राजनीति, रणकौशल की बातें समझाई थीं। दर्शको की सुविधा के लिये थोड़ा स्पष्ट करना जरूरी था हालांकि ये दृश्य भी सुंदर बन पड़ा है। अब आते है 'छावा' (संभा जी) के मुख्य दुश्मन औरंगजेब के बारे में जिनकी कोई चर्चा नहीं हुई। कमाल का मेकअप मानो औरंगजेब स्वयं आ खड़ा हुआ है (औरंगजेब की जो हमने तस्वीरे देखी है) और अभिनय तो माशाअल्लाह। संभाजी के चरित्र से, कठिन औरंगजेब का चरित्र था और उसे बखूबी निभाया अक्षय खन्ना ने, जिन्हें मैंने बहुत देर में पहचाना। उनका लहजा कमाल का था। एक बहुत बड़ी गलती हुई कि औरंगजेब की बहन जहाँ आरा उनकी कुटिल राजनीति में पूरी जिंदगी उनके साथ रही, फिल्म में उन्हें उनकी बेटी बताया गया है। मैं पुस्तक के हिसाब से सोच रही थी पर फिल्म में शायद ये बात कहीं ओर से ली गई है। मृत्यु का दृश्य इतना मार्मिक बन पड़ा है कि यदि आप ऐतिहासिक शिक्षा के लिये बच्चों को ले जाना चाहते है तो ना ले जायें। इस दृश्य को बहुत लंबा खींचा गया है। मेरे हिसाब से शुरूआती दौर के दृश्यों की लंबाई में शिवाजी का जीवित रहना संभाजी के मृत्यु दृश्य से बदला जा सकता था। मेकअप, वेशभूषा, हथियार, युद्ध स्थल का चुनाव सभी अद्भुत था। गढ़ बदलने का विवरण जो पुस्तक में है उसका यहाँ कोई सुबूत नहीं है। पर फिर भी 'छावा' पढ़ने के बाद, कलाकारों के इतने सुंदर अभिनय को देखते हुये, फोटोग्राफी, साज-सज्जा, मेकअप सब अद्भुत है एक बार जरूर देखिये वीर संभाजी की जिंदगी।

जगमगाया मिंटो हॉल

आज पीएम मोदी मिंटो हॉल में सत्ता संगठन के प्रमुख नेताओं के साथ संवाद करेंगे। बैठक के लिए मिंटो हॉल सज धजकर तैयार हो गया है। फोटो: प्रवीण वाजपेई

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

मजे लीजिए इस भौकाली युग के

अ यह एक नया युग है। आप चाहें तो इस युग को उत्तर प्रदेश की भाषा में भौकाल का युग भी कह सकते हैं। भौकाल युग कई अर्थों में महाकाल के युग से बड़ा हो गया है। सचमुच का कोई युग हो तो उसकी सीमा रेखाएं होती हैं। मगर जिस युग में बस भौकाल काटा जाता हो उसकी भला क्या सीमा। जो जहाँ तक सोच पाए वो वहाँ तक कर जाए और जितना चाहे उतना कमा जाए।

इस युग के प्रारम्भिक काल में सुनने में आया था कि अमेरिका कनाडा के फ्यूनरल होम में इलेक्ट्रिक फ़रनेस में इतनी हीट और प्रेशर से मृत शरीर को गुजारते हैं कि उसकी अस्थियाँ दूसरी तरफ से हीरा बन कर निकलें। पत्नी अपने मृत पति को हीरे के रूप में अपनी अंगूठी में जड़वाकर सदा साथ होने का अहसास लिए बाकी का जीवन सुखमय गुजारे।

जीते जी जिसे हीरे की अंगूठी की उम्मीद में हमेशा अपनी ऊँगलियों के इशारों पर घुमा घुमा कर परेशान कर डाला, वो अब स्वयं हीरा बन कर अंगूठी में जड़ा उसकी उंगली पर ताजिंदगी घूमेगा ङ्क इससे बड़ा भौकाल और कौन काट सकता है? इसके लिए तो जो भी कीमत चुकानी पड़े वो कम है और इस बात को फ्यूनरल होम ने बखूबी समझा और कमाई का जरिया बनाया।

वहीं दूसरी तरफ श्राद्ध में पितरों की आत्मा की शांति के लिए कौव्वों को भोजन कराने की परंपरा रही है। जैसे जैसे शहर पेड़ों के बदले कोंक्रीट के जंगलों में परिवर्तित हुए, कौव्वा इस परंपरा से अनिभिज्ञ धीरे धीरे शहरों के लिए विलुप्त प्रजाति होता गया। पुनः कुछ भौकालियों को कौव्वों की इस विलुप्तता की आपदा में अवसर नजर आया और वो सचमुच के जंगल से कौव्वा पकड़ कर शहर ले आए और श्राद्ध के मौसम में श्रद्धा अनुसार चढ़ावा लेकर सभी के पितरों की आत्मा को शांति पहुंचा कर भौकाल काटने लगे। परंपरा बनी थी यह सोच कर कि मृत आत्मा कौव्वे के रूप में आकर भोजन गृहण करेगी किन्तु इस भौकाली युग में एक ही कौव्वे में कई पितर पैकेज डील में चले आ रहे हैं और उस कौव्वे को पिंजरे में कैद कर उसका मालिक मोटी कमाई कर रहा है वरना कौव्वा कब किसी पिंजरे का पंक्षी रहा है- यह बस इस भौकाली युग में ही संभव है।

इधर मृत आत्माओ के नाम कौव्वे से लोगों को कमाता देख इसी मृत आत्मा इंडस्ट्री से जुड़े अन्य लोग भी भौकाली काटने के उपाय सोचने लगे। किसी को विचार आया कि आज जिस हिसाब से युवाओं में पश्चिमी देशों में जाकर बस जाने की होड लगी है चाहे लीगल या इललीगल डंकी तरीके से - इन युवाओं को भला कब समय मिलेगा या ईललीगल जा बसे लोगों को क्या रास्ता बचेगा कि जब उनके माँ बाप गुजरें तो आकर उनका अंतिम संस्कार कर पाएं। ऐसे में नया प्रचलन शुरू हुआ कि हम अंतिम संस्कार से लेकर पाँच नदियों में अस्थि विसर्जन और ब्राह्मण भोज का इंतजाम करते हैं ङ्क अलग अलग पैकेज हैं। सब ही कर्म कांडों के वीडियो और कुछ एक्स्ट्रा पेमेंट में आपकी फोटो एआई के माध्यम से ओवरले करके ताकि ऐसा नजर आयें कि आप ही सब संस्कार कर रहे हैं। पैकेज खूब चल निकला और बड़ी कमाई का जरिया बना - भौकाल ही तो है। न आप हैं और न ही आपके संस्कार। मगर कैमरा और एआई आपको परम संस्कारी दिखाकर मानेगा- वाह रे यह भौकाल का युग। क्या क्या न हो जाए।

आज सुना कि प्रयागराज में लगे महा कुम्भ में पाप काटने के लिए आपको जाना जरूरी नहीं है। एक स्टार्ट अप खुली है। आप उसे अपनी तस्वीर भेज दें। वो उसे प्रिन्ट करके संगम में न सिर्फ डुबकी लगवा देंगे बल्कि उसकी वीडियो बनाकर आपको वापस भी भिजवाएंगे और अपने सोशल मीडिया से अपने फॉलोवर्स को भी भेजेंगे उसे वायरल कराने। आप फिर उसे अपने सोशल मीडिया से वायरल कर लें। कीमत मात्र 1100 रुपये। लोग फोटो भेज रहे हैं, वो उनको डुबकी लगवा कर पुण्य दिलवा रहे हैं - अब इससे बड़ा भौकाल और क्या कटेगा, यह तो आने वाला समय ही बतलाएगा।

हर युग अपने आप में एक कमाल का युग होता है तो मजे लीजिए इस भौकाली युग के जिसमें आप जी रहे हैं।